B/H

55

Jakhmi Panjab

Disability and bind

जख्मी पंजाब

प्रकाशक—

शर्मा

Zakhmii Panjaab
by Kishanacanda Zebba
Pub. Amar Nath Sharmaa
Calcutta
1922 (2nd ed.)
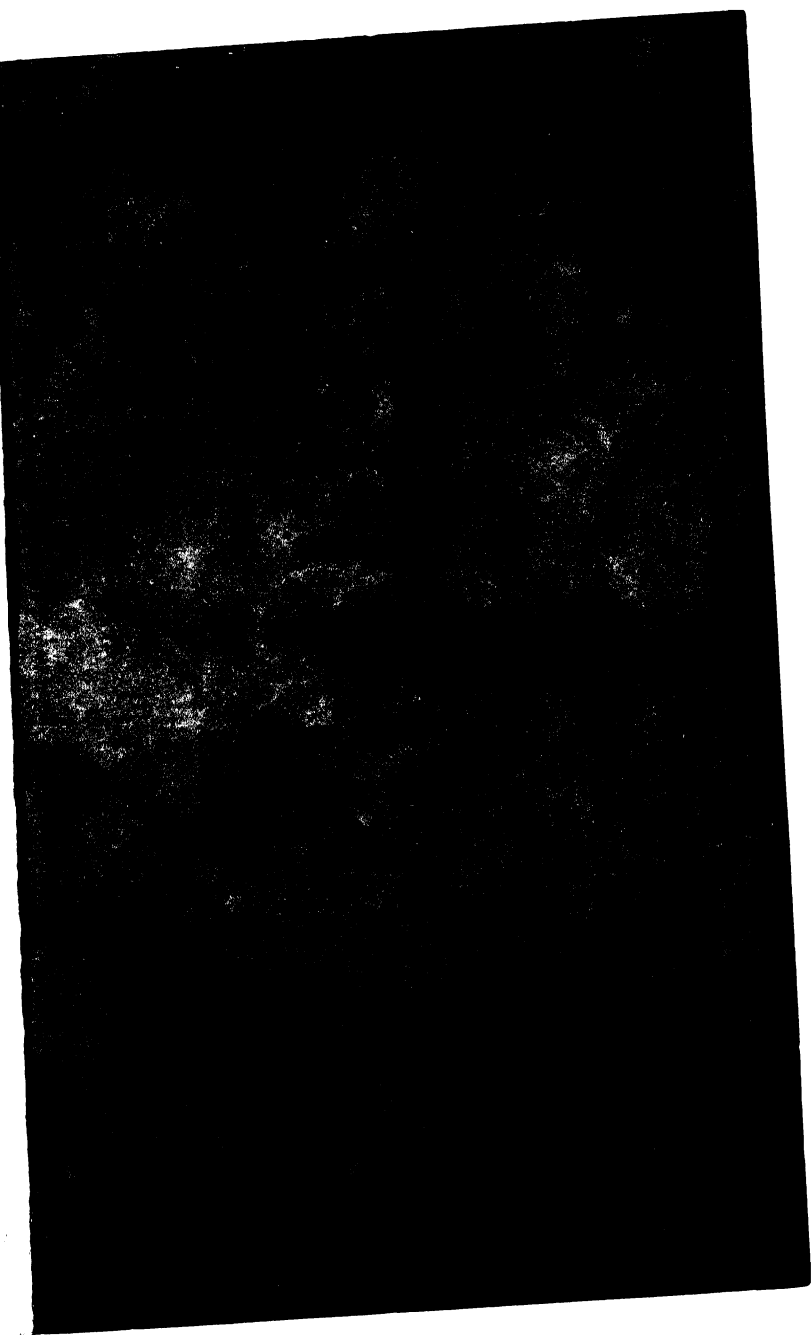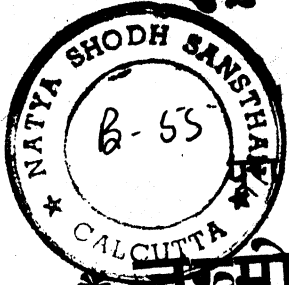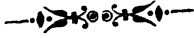
भूमिका।

———

मित्रगण! ड्रामा लिखना कोई साधारण बात नहीं।
बड़े बड़े योग्य और विद्वान् लेखकों ने इस कलामें अपनी
लेखनी का चातुर्य्य दिखाया है, किन्तु दुर्भाग्य वश सफलता
नहीं पा सके। तुक बन्दी कर देना अथवा इधर उधर से पद
पंक्तियोंको खेंचा तानी करके पद्य (नज़म) और गद्यका
एक संग्रह पाठकोंके सामने रख देना कोई नाटक रचना नहीं
कहलाता। इस अथाह सागर में तैरने वाले कविको पद पद
पर गोते खाने पड़ते हैं। वह नाटक लेखन के विशेष नियमों
के अनुसार नया रङ्ग नयी चाल नया चित्र और नया विचार
निकालने का प्रयत्न करता है। "थोड़ा और मीठा"
यह नियम प्रतिक्षण उसके हृदय नेत्रके सम्मुख रहता है।

नाटक लेखकको इस बात पर विशेष ध्यान रहता है।
कि कारेक्टर (पात्र) की कोई बात उसकी पहुंच से बाहर न
हो और प्रत्येक बात ऐसी विशेषता से दरसाई जाए कि
जिसमें कल्पित होते हुए भी वास्तविकताका रङ्ग दिखाई दे।
घटनाओंकी सचाई अपनी झलक दिखा जाए। यह काम

कोई अभ्यास अथवा अध्ययनसे नहीं आता, इसके रसको वही चखता है जिसको परमात्माने नाटक लिखने की विशेष योग्यता जन्म से ही दी है, जिसकी कुशाग्र बुद्धि सुविचार पूर्ण हैं, जो सृष्टि और उनकी सुन्दरता हृदय की सूक्ष्म दृष्टिसे देखनेकी विशेष प्रतिभा रखता है।

नाटक कला कहांसे आई, भारतको पुष्प वाटिका में यह मनोहर क्यारी किस मालीने लगाई, पहले पहल नाटक किसने बनाया, स्टेज पर खेलनेका विचार प्रथम किसको आया हमारे पाठकोंके मनमें यह प्रश्न अवश्य उठते होंगे। जिनका उत्तर विस्तार से देनेकी हम यहां आवश्यकता नहीं समझते, क्योंकि इस विषय पर पहले बहुत कुछ कहा जा चुका है, हां किसी नयी बात का वर्णन कर देना हम कर्त्तव्य समझते हैं।

भारतवर्ष में सब से पहले (जब कि इस आर्य्य सेवित भूमि पर तो क्या, संसारमें कहीं नाटकका नाम भी न था) मर्य्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रके वीर पुत्रों लव और कुशने राम नाटक संस्कृत भाषामें लिखवा कर स्टेज पर करवाया। उसके बाद समय बदला, संसार चक्रने कई चक्कर खाए, कालिदासके अद्वितीय नाटक स्टेज पर आए। तत्पश्चात् हिन्दी नाटकोंका रवाज हुआ फिर नये युगमें शेक्सपियरके अंग्रेजी ड्रामोंने उर्दू की पोशाक पहन कर स्टेजको नयी रोशनी के सांचेमें ढाल दिया।

पाठकगण ! मुझे इस कलाका अभ्यास करते बारह वर्ष लगभग हो चुके है। नौकरी और विद्याध्ययन की राखमें दबी हुई शौककी चिङ्गारी पहलेसे विद्यमान थी, केवल समय की हवा लगने की आवश्यकता थी, स्वाभाविक लगनने अपना रङ्ग दिखाया और पूरे शौक और विश्वासके साथ मैदानमें आया। सूरदास, नरसी भगत, जगतसिंह, बालकृष्ण, भीष्मपितामह, प्रह्लाद, गङ्गावतरण, सीता बनवास, दानवीर कर्ण इत्यादि नाटक लिखे। स्टेज पर उर्दू के स्थान में हिन्दीका रिवाज दिया। यहां तक कि मेरे इन नाटकोंके आधार पर देशमें कई एक खालस हिंदु धार्मिक कम्पनियां पैदा हो गई। धार्मिक नाटक देखने के लिये पबलिकने भी जोश और चाव प्रगट किया। परंतु आज समयका प्रवाह किसी और तरफ़ है। रसिक और प्रेममय नाटकोंका स्थान धार्मिक नाटकोंने लिया था। अब धार्मिक नाटकोंको पीछे छोड़ कर राजनैतिक ड्रामे अपना पाओं स्टेज पर आगे बढ़ाना चाहते हैं। क्योंकि महात्मा गांधी ने पालिटिक्सको धर्म के आधीन कर दिया है। नहीं नहीं, इससे प्रथम शास्त्रकार भी इस विषय पर उचित प्रकाश डाल चुके हैं, जैसा जल वायु है, स्वभाव भी वैसा ही हो जायगा। आज वह समय है कि जिस लेक्चरमें पालिटिक्स की झलक नहीं कोई उसकी आवाज़ नहीं सुनता। जिन पुस्तकोंमें पालिटिक्सकी रङ्गत नहीं वह रद्दीके हवाले हैं

भला कौन पढ़ता है। यही अवस्था नाटकों की है अब लचर और रसिक विषय, भद्दे सदाचारसे गिरे हुए कामिक को कोई पसन्द नहीं करता।

लेखक को भी समय प्रवाह जिस तरफ़ हो, उसी ओर चलना पड़ेगा समय उसको जबर्दस्ती चलावेगा, या तो वह पब्लिक को उसकी चेटकके अनुसार वर्त्तमान कालका सच्चा चित्र खेंच कर दिखायेगा अथवा लेखनी छोड़ कर इस मैदान से भाग जायेगा। दिनोंकी बात है मित्र लोग मुझ तुच्छसे लेखक की प्रशंसा के पुल बांधने लगे। बातचीत में नाटक लिखने का विषय छिड़ गया एक सज्जन ने सलाह दी कि पंजाब ट्रेजडीका ड्रामा लिखो, अत्यावश्यक है, क़द्र होगी, पबलिक पसन्द करेगी। पंजाब ट्रेजडीसे बढ़कर और कौन सा विषय करुणामय और रोचक होगा। इसी सम्मति ने मेरे अन्दर यह सङ्कल्प पैदा किया और उसी दिनसे इस विषय पर विचार करना आरम्भ कर दिया। आज परमात्माकी कृपासे वह विचार और वह शुद्ध सङ्कल्प परिपक्व होकर इस पुस्तक के रूपमें पाठकों के सन्मुख है।

केवल ट्रेजडी को लिखा है। किसी प्रकारकी कोई कल्पना सम्मिलित नहीं की। बहुतसे पात्र कल्पित लेने पड़े हैं। इसके बिना किसी नाटकमें भी वह रङ्गत नहीं आ सकती

जो केवल नाटक का ही अंश है, यद्यपि उद्देश्य वही है, परंतु नाटक कलाके नियमानुसार शब्दोंके बन्धन से मुक्त होकर घटनाओं को अपने शब्दोंमें लेखबद्ध किया है। जो कुछ बर्तनमें होता है वही टपकता है। अपनी योग्यता के अनुसार जहां तक पहुंच थी पहुँच गया, अब क़द्र करना न करना आपके हाथ है।

"ज़ेबा"

इख़लाक़ी जुर्म

है यदि कोई महाशय इस नाटकको स्टेज पर खेलनेका विचार करे, क्योंकि पहले तो हमने यह नाटक केवल प्रेमी जनों और देश प्रिय सज्जनों के पढ़नेके वास्ते ही तैयार किया है, और दूसरी बात यह है कि महात्मा तिलक गांधी और शौकत अली आदि जैसी महान् आत्माओं की स्टेज पर नक़ल उतारना एक ऐसा पाप है जिसका प्रायश्चित होना ही असम्भव है।

इस आवश्यक निवेदन को संपूर्ण नाटक मण्डलियां नोट कर लें।

"जेबा"

॥ मङ्गलाचरण ॥

नट (सूत्र धार) व नटीका परमात्मा की स्तुति करते हुए दिखाई देना।

गाना।

चरण शरण तुमरी सुखदाई।
सकल जगत के आप सहाई ॥
दुख सङ्कट के हरणाहार-सब के दाता हो उदार।
कुद्रत नुद्रत पर निसार ॥
सत विश्वासी-असत विनाशी-हो सुखराशी।
सृष्टि सुन्दर सरस रचाई ॥

नटी-प्राणनाथ! आज इस रङ्ग भूमि पर कौनसा नाटक दिखलाओगे?

नट-प्रिये! उस नाटक का नाम लेते मेरी ज़बान थर्राती क्या पूछती हो, दुखकी शिलासे आत्मा पिसी जाती है।
खुशी का यह नहीं परयोग गमका यह फसाना है।
हमें नाटक यह करुणामय सभासदोंको दिखाना है॥
कि जिससे बे तरसको रहम की आदत सिखाना है।
जो सङ्ग दिल हैं उन्हें भी खून के आंसू रुलाना है॥

नटी-मन की आज़ादी को ग़मकी बेड़ियोंसे जकड़ने वाला दुखके फौलादी पंजेसे अन्तरात्मा को पकड़ने वाला वह ऐसा कौनसा इतिहास है, जिसका नाम लेनेसे पहले ही आपकी सूरत उदास है?

नट-वह इतिहास जिसने भारतवर्षमें दया दृष्टि के बदले खून के छींटे उड़ाए हैं, जिसने योग्य पुरस्कार के बदले आकाश से आग के गोले बरसाए हैं।

जिसका है हर एक फिकरा खून से सींचा हुआ।
जिसका फोटो बे गुनाह ने मरके है खींचा हुआ।
जिसके मृजमूं से लहू की आ रही सो बास है।
खूने नाहक से जो इक गूंधा हुआ इतिहास है॥

नटी-तो मतलब की तर्फ आइये, उसका नाम तो बतलाइये पुराना है या ताज़ा यह तो फर्माइये ?

नट-पुराना नहीं बल्कि ताज़ा, बागमें खिले हुए खूबसूरत फूलकी मानिन्द बिलकुल ताज़ा।

अभी तक ज़हर है बाकी जो उगला सांपने फन से।
निशां मिलता है बर्बादी का इस उजड़े नशेमन से॥
अभी तक ज़ख्म ताजा है जिग्र के जो लगे गन से।
लहू का रङ्ग अभी उतरा नहीं कातिलके दामन से॥

नटी-क्या इसी बीसवीं सदी का वृत्तान्त है ?

नट-हां, और कोई दो एक वर्ष का वृत्तान्त है।

अब तक हैं उस अग्नि से पड़े सीने पै छाले।
सुनने में अभी आते हैं विधवाओं के नाले॥
अब तक भी अनाथों की वही आहो बुका है।
भारत का जिग्र ज़ुल्म के खञ्जर से छिदा है॥

नटी तो क्या यह कोई भारतवासियों की विपदा है, भारतवर्ष की कथा है ?

नट-हां उस आर्य्य सेवित भारतवर्ष को आज कई सदियों से अन्य जातियों के पैरों मे कुचला जा रहा है, जो गुलामी की जंजीरोंमें जकड़ा हुआ अन्दर ही अन्दर गमसे घुला जा रहा है, वह भारत जिसके हाथ पाओं सुनहरी जंजीरों में जकड़े हैं, जिसके मनमें बुद्धि और आत्मा विदेशी विचार के रङ्ग में रंगी है, जिसके सिर पर अनर्थ के भाले हैं, और जबान पर ताले हैं।

बन्द पिंजरे में है पर आज्ञा नहीं फरियाद की।
घुटके मर जाए यही मर्जी है बस सैयाद की॥

नटी-भारतवर्ष में ऐसा कौनसा अनर्थ हुआ, निर्दोष ऋषि सन्तान पर अनर्थ करने को कौनसा समर्थ हुआ ?

दोहा—भारत की गुणवान है जो भावी सन्तान।
किया ऋषि सन्तान का है किसने अपमान॥

नट-उस राक्षस रूपी मार्शल ला ने।

नटी-मार्शल ला ने क्या अनर्थ किया ?

नट-वह अनर्थ जो आज तक किसी न्यायशाली हाकिम ने अपनी निर्दोष प्रजा पर नहीं किया। चीन जापान, रूस, ईरान, तुर्की, अफ़ग़ानिस्तान, फ्रांस, इंग्लिस्तान का इतिहास खोल कर देखो, मगर ऐसी करुणा जनक घटना न पाओगी। कहने

को मार्शल ला दो शब्द हैं, जरासी जबान हिलानेका नाम है, परंतु भारतमें आज इस मार्शल ला की बदौलत कितने आत्माओंका जीना हराम है, घर घर में कुहराम है।

अच्छा बुरा न देखा सब को लिताड़ डाला।
मुद्दत से जो बसा था उसको उजाड़ डाला॥
रौलटने भी निकाला यह चोचला जफाका।
भारतको यह मिला है अच्छा मिलह वफा का॥

नटी-लेकिन मार्शल ला तो बागी प्रजाके वास्ते है, उस प्रजा के लिये नहीं, जो राजा की खातिर अपनी जान तक लड़ा दे, राजा के हित को रणभूमि में अपना पवित्र खून बहा दे, जो राजा के गौरव रूप देवता पर अपने प्यारे बच्चोंकी भेंट चढ़ा दे।

दिया इङ्गलैण्ड ने भारत को जो समरा वफाओं का?
सिलह था यही नेकी का यह बदला था वफाओं का?

नट-प्रिये! आज इस घटना से इङ्गलैण्ड के नाम पर कलङ्क का टीका लग रहा है। एक मछली सारे जलको गन्दा कर देती है, एककी मूर्खता तमाम जातिको परागन्दा कर देती है।

ओडवायर गर न होता तो न होता यह अनर्थ।
खूनरेजी को न होता इस तरह डायर समर्थ॥
ओडवायर शह अगर देता न उस जल्लाद को।
हौसला पड़ता न फिर डायर सितम ईजादको॥

नटी-डायर और ओडवायर कौन ?

नट-पंजाबका सङ्ग दिल लाट ओडवायर और जल्यां वालेका जल्लाद जरनैल डायर।

नटी-प्रजा का रक्षक और प्रजाका खून करने वाला जिस बतनमें खाया उसी को छेद कर डाला, जिसके सायेमें विश्राम किया, उसी दरख्त को जड़से उखाड़ दिया, जिस खिर्मन से सारा संसार रोजी पाता है, उसीको उजाड़ दिया ?

सन्तरी ही चोर हो तो कौन रखवाली करे।
चमन का क्या हाल जब माली ही पामाली करे॥

नट-निस्सन्देह, इन हाकिमों ने बादशाह की दी हुई ताकत और तलवार का बेजा इस्तामाल किया है। भारत के कुल्हाड़े से भारतही को हलाल किया है।

अगर चलती रही गोली यूंही निर्दोष जानों पर।
तो कौए और कबूतर ही रहेंगे इन मकानों पर॥
मिटा डालेंगे गर इस तरह, हाकिम अपनी पर्जा को।
हकूमत क्या करेंगे फिर वह, मरघट और मसानों पर॥

नटी-अनर्थ है इन हाकिमोंने भारतका बड़ा अपमान किया।

नट—बल्कि यों कहो कि बड़ा ऐहसान किया।

पकड़ कर कान से इस ओडवायरने उठाया है।
पड़े सोते थे तोपोंसे यह डायर ने जगाया है॥

अगर गोली न चलती खूनके नाले न गर बहते।
न जाने कब तलक हम ख्वाब गफलतमें पड़े रहते॥

नटी-तो क्या आज इस घटना का नाटक दिखलाओगे।

नट-हां आज इसी घटनाके रोचक दृश्य दिखलायेंगे. न्याय और अन्याय का चित्र खेंच कर बतलायेंगे, जिससे भारतवासी अपने अधिकार को जानकर संसार को अपनी बीती सुनायेंगे, अपना दुखड़ा राजा के कानों तक पहुंचायेंगे।

गाना।

रोना है आप खुद भी औरों को आज रुलाना है।
भारत के दुखिया पुत्रों का रो रो कर हाल सुनाना है॥
निरापराध जो कत्ल हुये डायर के अग्नि शस्त्र से।
उनके जो दुखिया बंधु हैं उनका दुख दर्द बटाना है॥
किस तरह आज कल दुनियां में नेकीका बदला मिलता।
जो साथ हमारे बीती है वह विपदा हमें बताना है॥
किस तरह पशुवत होता है बर्ताओ भारत पुत्रों से।
भारतके जो हितकारी हैं उनको यह चित्र दिखाना है॥
अपराध नहीं है गैरोंका है दोष हमारी किस्मत का।
यह भारत एक अकेला है और बैरी एक ज़माना है॥

——o——

पूरा ड्रामा।

पंजाब ट्रैजिडी

अर्थात्

ज़ख्मी पंजाब।

सीन पहला ऐक्ट पहला

(स्थान गांधी आश्रम)

महात्मा गांधी का भारत माता की उपासना
करते हुए दिखाई देना।

गाना।

जय जय बन्दहुं सकल सुखकारी।
जननी जन्म भूमि महतारी॥
जय जय श्रीकृष्ण की माता, जय रघुबरकी जनम प्रदाता।
तोरी रज मस्तक पर धारूं, तो पै तन मन धन बलिहारूं।
तू पदार्थ सब उत्पन्न करनी, गङ्गा जमना हिरदे धरनी।
॥ जय जय ॥

गांधी-(ज़बानी)।

आज प्रसन्न हो कि माता दर्दो ग़म जानेको है।
अब तो पच्छिम से कोई अच्छी ख़बर आने को है॥
तेरे बच्चोंसे वफ़ायें की हैं इंग्लिश राज से।
राज कर देगा तसल्ली अब तेरी स्वराज से॥
(आकज़ भारत चित्रसे भारत का प्रत्यक्ष देवी स्वरूपमें प्रकट होना।)

भारत—

दोहा—तुझको देकर जन्म मैं धन्य हुई हूं लाल।
एक तेरे पुरुषार्थ से जाति हुई निहाल॥

गांधी-हे माता, हे जननि !! हे सर्व सुख दाता !!! तेरी सेवा करना, तो प्राणी मात्र का धर्म है, जिसने तेरे उदर से जन्म लेकर तेरी कुछ सेवा नहीं की वह परले दर्जे का बेशर्म है।

तूने जन्म दिया है हमको तूने दूध पिलाया।
तूने पाला पोसा हमको तूने लाड लडाया॥
लाखों दिये पदारथ हमको तूने मनुष्य बनाया।
गङ्गा जमना और हिमालय सब तेरी है माया॥
तेरी रजके बदले लूं मैं राज न यह पृथ्वी का।
मैं अभिलाषी हूं अयमाता शरणागत पदवी का॥

भारत-तेरे जैसे जिस देश में सपूत हों उसका अवश्य

उद्धार होगा, जिस नावके केवट तुम हो वह बेड़ा जरूर पार होगा।

यूं तो लेते हैं जनम खा पी के मर जाते हैं सब।
और मुसाफिर की तरह से कूच कर जाते हैं सब॥
यूं तो सब चलते हैं साधारण धर्म उपदेश पर।
जन्म है पर धन्य उसका मर मिटे जो देश पर॥

गांधी-हे जननि! मैं कुछ भी नहीं तेरी पावन रजका एक ज़र्रा मुझ से अधिकतर है। तेरी खाक पर रींगने वाला एक तुच्छ जीवधारी मान और रुतबे में मुझसे बेहतर है। मेरी शान मेरा सन्मान इसीमें है कि मैं भारत सन्तान हूं तेरी भक्ति के अग्निकुण्डका एक नाचीज बलिदान हूं।

जब तक मैं जियोंगा तेरी सेवा ही करूंगा।
और मौत जो आई इसी आशामें मरूंगा॥
जब जब हो मेरा जन्म इसी देशमें जन्मूं।
हर बार इसी देश के हित प्राण तियागूं॥

भारत-तो हे आर्य्य पुत्र! क्या अब भी कुछ विलम्ब है, स्वाधीनता जो मेरा जन्म अधिकार है, अब भी मिलनी दुशवार है, क्या किसीकी सेवा और मेहनत भी वृथा जा सकती है, आम की शाखा धतूरेका फल ला सकती है?

जो कुछ थी पास मेरे पूंजी इंग्लैण्ड पै उसको वारा है।
अन्न के भण्डार किये खाली बच्चों को भूखा मारा है॥

गिन गिन कर भेंट चढ़ाए हैं बच्चों से क्या कुछ प्यारा है।
एक एक जिगरका टुकड़ा भी दे देना किसे गंवारा है॥

गांधी-माता ! नेकी कभी जाया नहीं जाती अंग्रेज कौम ऐसी ऐहसान फ़रामोश नहीं, हमें अभी तक उसकी तरफ़ से असन्तोष नहीं, शान्ति करो, वह देखो, आजादी की देवी समुन्दर की विकट लहरों पर सवार होकर पच्छम से इधर को आ रही है।

वेद में व्याख्याता, शास्त्रों की ज्ञाता, सर्व सुखकी दाता, शुद्धाचरण की माता आ रही है।

नाज़ की लहरों पे वह देखो तो इठलाती हुई।
आ रही आनन्द की वर्षा है बर्साती हुई॥
आज सदियों की यह आशा कौम की पूरन हुई।
क्या न निकलेगी गुलामी अब भी घबराती हुई॥

(देवी रूप से आजादी का दाखल होना)

आजादी-तोड़ दो, गुलामी की जंजीरों को आत्मिक शक्ति के झटके से तोड़ दो, स्वतन्त्रता विचारों की ठोकर से पराधीनता के सुनहरी खिलौने को तोड़ दो।

छोड़ दो बस आज से परतन्त्रताके मशगले।
आओ अय भारत के बेटो मेरे झण्डे के तले॥

आज से आकाश और पृथ्वी यह सब आज़ाद है।
मरना और जीना तुम्हारा सब कुछ अब आज़ाद है॥

(भयानक राक्षस रूप में रौलट बिल का दाखल होना और आज़ादी का दामन पकड़ लेना और भारत मातासे भेंट करने से आज़ादी को रोक देना)

रौलट बिल—ठहरो ठहरो, अपने पवित्र आत्मा को कलुषित मत करो, इस गुलामी की धर्ती पर पैर मत धरो।

न अपना आप खो बैठो तबीयत की रवानी से।
कहीं अपमान हो जावे न यां नाकद्रदानी से॥
अभी कुछ और सदियों तक समन्दर की हवा खाओ।
कहीं इन बागियोंसे मिलके तुम बागी न हो जाओ॥

गांधी—(रौलट बिल से) कौन हो, भारत के पवित्र अधिकार, वफादारी के अनमोल पुरस्कार, प्राचीन भारत के शृङ्गार अर्थात् आज़ादी को अपनी जन्म भूमि में आने से, अपनी माता की गोदी की तरफ़ हाथ फैलाने से रोकने वाले तुम कौन हो ?

मसल कर हम को पैरों से हमारा नाश करते हो।
हमें क्यों अपने अधिकारोंसे तुम निराश करते हो॥

यह आज़ादी हमारे बाप दादा की वरासत है।
किसी का हक़ दबा लेना कहां की यह सियासत है ?

रौलट बिल—तुम सियासत की बातों को क्या जान सकते हो, तुम महात्मा हो, पालिटिक्स के गूढ़ तत्व को क्या पहचान सकते हो।

करो तुम धर्म का धन्धा घरों का काम करो।
पकड़ के हाथमें माला को राम राम करो।

गांधी—लेकिन वह कौनसी नयी वस्तु है जो तुम्हें हमसे अधिक आज़ादी का अधिकारी बनाती है, किस बातमें तुम्हारे अंदर हमसे अधिकता पायी जाती है, तुम्हारी तरह हम सम्पूर्ण रङ्ग नहीं, कर्म या ज्ञान इन्द्रियोंसे हीन हैं, हमारे दिल में दिमाग़ नहीं या किसी और मानवी वस्तु से क़ुद्रती तौर पर विहीन हैं।

क्या हो तुम कुछ देवता हम दुर्बुद्धि हैवान हैं।
हम भी तो भगवान के हैं पुत्र और इन्सान हैं॥

रौलट बिल—लेकिन तुम्हारे हाथ में यह अधिकार देना हमारे लिये इख़लाक़ी खुदकुशी से बेहतर है।

गांधी—किस तरह ?

रौलट बिल—अगर किसी दीवाने, सिड़ी, सौदाई के हाथ तलवार पकड़ा दी जाय, तो वह जरूर उस तलवार से अपना और दूसरों का गला काट देगा।

जो अय्याशी में डूबे हैं जो गहरी निद्रा में सोये हैं।
जो कमजोरी के तागे हैं अविद्या से परोये हैं।
अविद्या कायरी सुस्ती हो जिन लोगों का हिस्सा है।
वह आजादीको क्या समझें यह हमलोगोंका वर्सा है॥

गांधी—हम कायर हैं, लेकिन हमें कायर किसने बनाया ? तुम लोगोंके स्वार्थ ने। हम गुलाम है मगर हमें मिथ्याचार की शिक्षा देकर गुलामी का हार किसने पहनाया ? तुम लोगों के स्वार्थ ने।

वर्ना हम तो वीर थे वीरों की हम सन्तान थे।
तुमको भी विद्या सिखाई हम तो वह विद्वान थे॥
आज लेकिन गर्दिशे अय्याम से नाकाम हैं।
आपकी किरपा से पर-आधीन हैं बदनाम हैं॥

रौलट बिल—वह किस्सा अब पुराना हो गया तुम्हारी गुरुता को एक जमाना हो गया। जब तक तुम्हें नये सिर से आजादी की शिक्षा न दी जायगी, यह आजादी तुम्हारे हिस्से में नहीं आएगी।

वह कर सके तमीज न दिन और रात में।
देदो अगर चिराग भी अन्धे के हाथ में॥

गांधी—लेकिन जब तक किसी आदमी को पानी में बे सहारा न छोड़ दिया जायगा, उस को हरगिज तैरना नहीं आएगा, जब तक भारतवासियों को आज़ादी की आबो हवामें

न छोड़ा जायगा, तुम्हें उनकी योगयता का जन्म भर तक विश्वास न आयेगा।

रौलट बिल—मगर तुम लोग बागी हो, बग़ावतसे आजादी का कुछ सरोकार है ?

गांधी—मिथ्या विचार है, क्या बादशाह वक्त का सङ्कट में हाथ बटाना बगावत है क्या लड़ाइयों में बादशाह की खातिर ज़र लुटाना बगावत है क्या ग़रीब बच्चों को रण देवी की भेट चढ़ाना बगावत है ?

मर [illegible] देने में जिन को जरा इन्कार नहीं।
हम हैं [illegible] जा कि बगावत के रवादार नहीं॥
यह हमारे तो धर्म के भी अनुसार नहीं।
हम हैं बागी तो तो यहां कोई वफादार नहीं॥

रौलट बिल—कुछ भी हो, तुम्हारी आशाओं को अब अच्छी तरहसे कुचल दिया जायगा, तुम्हारी गुलामी की जंजीरों को आज से और भी ज्यादा कठिन किया जायगा।

गांधी—इसका कारण।

रौलट बिल—आने वाले सङ्कट का निवारण, हमने तुम्हें उन अपराधों से बाज़ रखने की ठानी है, जिनसे हमारे देश और जाति की हानि है।

गांधी—तो क्या देश भक्ति जुर्म है ?

रौलट बिल—हमारे लिये नहीं तुम्हारे लिये जुर्म है, और

अब इस जुर्म का मुजरिम न्याय प्राप्त नहीं कर सकेगा, यही जुर्म रोकने की सबील है अब मेरे राजमें न दलील है न वकील है और न अपील है।

नाला नहो जारी नहीं फरयाद नहीं है।
आगेकी तरह हिंद अब आज़ाद नहीं है॥

गांधी—अगर तुम्हारी हस्ती हमारी शहरी आज़ादी के प्रवाह को रोकेगी आज़ादीके अमृत सरोवर तक पहुंचने के लिये हमारी राहका टोकेगी तो हम तुम्हारी हस्ती से ही इनकार कर देंगे, अपनी पवित्र धर्म भूमि पर पावों फैलाना तुम्हारे लिये दुशवार कर देंगे।

हम भी हैं मनुष्य हम कोई हैवान नहीं हैं।
पत्थर नहीं तिनका नहीं बे जान नहीं है॥
माना कि हैं पंजे में हम इस वक्त तुम्हारे।
सीने में है दिल, दिलमें है इक दर्द हमारे॥

रौलट बिल—अगर तुम मेरी हस्ती से इनकार करोगे तो मैं बल कौशल से मनाऊंगा।

गांधी—तुम्हारा बल कौशल मेरे शरीर से मनवा सकता है, लेकिन आत्मा को कदाचित् नहीं हिला सकता है।

भट्टी में चाहे झोंक दो पानी में बहा दो।
शस्त्र से काट दो कि फांसी पर चढ़ा दो॥
इक बार से तलवार से गर्दन को उड़ा दो।

नस नसको मेरी काट दो रग २ को मिटा दो ॥
सब सख्तियां सहलूंगा मैं प्रह्लाद की न्याई।
दुनियां में जियूंगा मगर आजादा की न्याई ॥

रौलटबिल—जानतेहो कि मेरा हुक्म न माननेसे क्या होगा?
गर तुम्हारे क्रोध से सोना स्याह हो जायगा।
जानता लेलो है अब लाग्रा तबाह हो जायगा ॥

गांधी—और क्या होगा ?

रौलट बिल--देखो, अभी मैं प्यार से समझा रहा हूं। मान जाओ।

(चमत्कार लिबासमें रिफ़ार्म का आना)

रिफ़ार्म—(रौलट बिल की हां में हां मिलाकर) हां मान जाओ, तुम तो बड़े भोले भाले धर्मात्मा हो मान जाओ, वृथा दुख न उठाओ, आराम से जिंदगी के चार दिन बिताओ (रिफ़ार्म का खिलौना देकर) लो इस रिफ़ार्म स्कीम का आनन्द उठाओ, इसको ग्रहण करो, इससे आजादी खारदार रास्ता साफ हो जायगा, और यह शीघ्र ही तुम्हें मंजिले मकसूद तक पहुंचायेगा।

गांधी—इससे क्या होगा ?

रिफ़ार्म—धारा सभाओं में तुम्हारे अधिकार बढ़ जायंगे, भारती सरकार के आला ओहदों पर तुम्हारे भाई शोभा पायेंगे ओ आसानी के साथ राजा तक प्रजा की आवाज पहुंचायेंगे।

आज़ादी—हे आर्य्य पुत्र ! स्वीकार करनेसे पहले बुद्धि को सावधान कर लेना, अमृत और विषको पहचान कर लेना।

नहीं दम इसमें कुछ भी यह सियासतका सराफा है।
खिलौना है यह चमकीला यह इक खाली लिफाफा है॥

रौलट बिल-महात्मा स्वीकार कर लो।

गांधी यह खिलौना देकर क्या बच्चों को बहलाते हो, मुंह में मिठाई देकर गुलामी की सख्त जञ्जीरों से जकड़ना चाहते हो।

काम करना चाहिये अपना बेगना देख कर।
पावों धरना चाहिये रुख और ज़माना देखकर॥
हिर्स और लालचमें जो मूरख है वह फंस जायगा।
मुर्ग दाना पर नहीं फंसता यह दाना देखकर॥

—(:०:)—

(टीला और पर्दा)

सीन ऐक्ट पहला दूसरा

स्थान तिलक आश्रम।

(महात्मा तिलक का गीता का पाठ करते हुए दिखाई देना। आकाशवाणी द्वारा देव बालाओं के गाने की आवाज)

गाना ।

तेरी सृष्टि का अय भारत बड़ा सुन्दर नज़ारा है ।
कहीं कैलाश पर्वत है कहीं गङ्गा की धारा है ॥
फलों से हैं लदीं शाखें शजर फूले हैं फूलों से ।
कहीं बेला कहीं चम्पा कहीं पर गुल हजारा है ॥
तेरी पूजा के लायक शुद्ध वस्तु पर नहीं मिलती ।
नगर में खोज कर ली है बनों को ढूँढ मारा है ॥
है अमृत दूध गायें का करूं क्या दूध से पूजा ।
मगर वह भी नहीं शुद्ध है कि बछड़े ने झाड़ा है ॥
बड़े सुन्दर खिले हैं फूल पर चूमे हैं भंवरों ने ।
तुझे यह भोग दूं जूठा मुझे यह कब गंवारा है ।
तो फिर यह मन मेरा शुद्ध है बड़ी अनमोल पूंजी है ।
अगर स्वीकार हो माता तो लो यह तुम पे वारा है ॥

तिलक—हे परम दयालु ! भगवान शक्तिमान !! देख देख, मेरी जननी भारतभूमि कितनी दुखी है । आज मेरे भारतवासी भाई दीन दशा को प्राप्त हो रहे हैं ।

हिन्दियों के वास्ते कोई ठिकाना भी न था ।
गैर मुल्कों में तो पहले आबोदाना भी न था ॥
अब तो अपने देशका भी बास मुस्किल होगया ।
पीसने के वास्ते आकाश भी सिल हो गया ॥

बचाओ, भगवान, चारों दिशाओं से सङ्कट के ओले बर्स रहे हैं, जननी के बच्चे भूखे हैं, टुकड़े २ को तर्स रहे हैं, प्रति दिन सवा मन स्वर्ण दान करने वाले दानवीर करण की सन्तान, आज कौड़ी कौड़ी को लाचार है, एक भारत है और लाखों मसीबतों की भरमार है। भगवान इस बूढ़े शरीर को बल प्रदान करो, कि जननी की सेवा कर सकूं, मेरे भारतवासी भाइयों का कल्याण करो।

शीघ्र दो शक्ति मुझे जननी का मैं सेवन करूं।
हो ज़रूरत तो मैं तन मन और धन अर्पण करूं॥
सोते उठते बैठते स्वदेश का ही ध्यान हो।
शुद्ध बुद्धि दो कि जिससे देशका कल्याण हो॥

(मिष्टर पटेल का दाखल होना)

मिस्टर पटेल—भगवान तिलक की जय, बाल गङ्गाधर तिलक की जय।

तू ही सरस्वती का सुहावन तिलक है।
तू भारत के मस्तक का पावन तिलक है॥
वतन के दुलारे सदा तेरी जय हो।
हे भारत के प्यारे सदा तेरी जय हो॥

तिलक—आओ प्यारे पटेल, आप जैसे सपूतों को पाकर भारत क्यों न प्रफुल्लित होगा, देशमें स्वदेश भक्ति का दीपक क्यों न प्रज्वलित होगा।

जिनको यह आन शान है औरों के वास्ते ।
सन्तान और प्राण है औरों के वास्ते ॥
जिनको ह अपने देश के सङ्कट से बेकली ।
उनसे ज्यादा कौन नसीबे का है बली ॥

पटेल—भगवन यह सब आप जैसे शुद्ध आत्माओं का प्रताप है कि हमारी रसना को सदा जननी का जाप है।

कोई भी आफत चाहे आजाए मेरी जान पर ।
दुख करे शासन सदा इस आत्मिक स्थान पर ॥
तो भी मैं तत्पर रहुंगा देश सेवाके लिये ।
है मेरा सर्वस्व हाजिर इसको पूजा के लिये ॥

तिलक—कहो प्रियवर, भारत भक्त, देशका क्या समाचार है ?

पटेल—जिधर देखो रौलटबिलकी पुकार है, आज हर एक भारती इसी के चिन्ता रूपी बन्धनमें गिरिफतार है। नेताओं (लीडरों) के सुविचार के गर्दन पर यही भूत सवार है। युद्ध समाप्त होने पर आशा लगाई थी, कि महगाई दूर हो जायगी, प्रजा आज़ादी की हवा खायेगी, परंतु अब प्रतीत हुआ कि भारत के भागमें ख्वारी है, वही भूख, वही गुलामी, वही लाचारी है और इन तमाम मुसीबतों पर अभी एक और आफ़त की इन्तिजारी है ।

हो रही है अब नयी तदबीर भारत के लिये ।
बन गई पराधीनता तकदीर भारत के लिये ॥

थीं प्रथम सोने की कड़ियां जिनमें था जकड़ा हुआ।
बन गई अब आहनी जञ्जीर भारत के लिये॥

तिलक—अब ऐलानियां नौकरशाही ने बतला दिया कि तुम्हारी कुर्बानियों की कीमत गुलामी है तुम्हारी किस्मत में हमेशा जिल्लत और बदनामी है, सर्वस्व बलिदान करने पर भी अपनी अभिलाषाओं में नाकामी है।

धक्के मिले हैं योग्य पुरस्कार के बदले।
ओले पड़े हैं मेह की बौछाड़ के बदले॥

पटेल—तात्पर्य्य यह कि दफ्तरी हकूमत का मंशा पवित्र नहीं है।

तिलक—बल्कि उसका यह मंशा है कि रौलट बिल से भारतवासियों की कलम और ज़बान छीन ली जाये, ताजा कुर्बानियोंके सिलेमें स्वराज के लिये जो प्रार्थना की जाने वाली है, उसको अभी से दबा दिया जाये, परंतु स्वतन्त्र विचार दबाये नहीं दबते।

ओस के क़तरों से शोला आग का बुझता नहीं।
मोम के हथियार से लोहा कभी दबता नहीं॥

पटेल—तो भगवन्, जब नौकरशाही ने निराशा की ज्वाला पर रौलट बिल का तेल छिड़क दिया, भारत के हित का जरा विचार न किया, तो फिर आप की क्या सम्मति है?

हैं वृथा नाले हमारे आह बेतसीर है।
हर तरह गर्दिशमें अब तो देश की तकदीर है॥

है निशाना जुल्म का और जौर का सब्बीर है।
क्या कोई भारतके बच जाने की भी तदबीर है॥

तिलक--हां, दफ़तरी हकूमत की मनमानी कारवाइयोंका मुकाबला करने के लिये एक हथियार बड़ा उपयोगी है।

वार जा सकता नहीं खाली यह वह तलवार है।
कुन्द होता ही नहीं हर्गिज़ यह वह हथियार है॥
जिसका हो प्रयोग तो सारा जगत भय भीत हो।
हार नौकरशाही की और हिन्दियों की जीत हो॥

पटेल—क्या याचनिया सवाल

तिलक—नहीं।

पटेल—सत्याग्रह की ढाल

तिलक—नहीं।

पटेल—आलमगीर हड़ताल ?

तिलक—नहीं, बल्कि अब हमें दफ़तरी हकूमत के वार को रोकने के लिये वह हथियार हाथमें लेना पड़ेगा, जिस हथियार को ध्रुव भक्त ने इस्तेमाल किया, जिस हथियारसे प्रह्लाद ने असत्य को पामाल किया, जिस हथियार से मीरा ने विजय पाई, जिस हथियार के धारण करने वालों ने कभी शिकस्त नहीं खाई।

दोहा—सांप मरे लाठी बचे और मतलब बर आय।
हींग लगे नहीं फिटकरी रङ्गभी चोखा आय॥

पटेल—अर्थात्।

तिलक—अर्थात्, असहयोग, नामिल वर्तन, अदम तआवन तान को आपरेशन। अन्याय और असत्यसे असहयोग करना शास्त्र का भी प्रमाण है, अनिष्टाचार से मुक़ाबला करना, असत्य से युद्ध करने के लिये हमारे पास यही अ ि म सामान है।

सेवक तजो कनिष्ट तजो स्वामी अन्याई।
तजो अधर्मी मित्र तजो निर्लज्ज लुगाई॥
तजो मुकद्दमे बाज़ और झगड़ालु भाई।
तजो पुत्र बदकार तजो खुदगर्ज सहाई॥
तजो राजसम्बन्ध न हो जिसमें कुछ न्याय।
सुख चाहो गर मित्र यही है एक उपाय॥

पटेल—तो हे लोकमान्य भगवान,भारतवासियों को असह-योग का उपदेश कीजिये, और संसार में देशोद्धार के यश को और भी निर्मल कर लीजिये।

वतन को तुम हो पर भरोसा बड़ा है।
तुम्हारे ही साहस पै भारत खड़ा है॥
अगर आप की जन परस्ती न होती।
तो दुनियां में भारत की हस्ती न होती॥

तिलक—प्यारे पटेल, मैं तो भाइयों का सेवक, जननी का दास और स्वदेश का पुजारी हूं, भारत के गौरवार्थ ही बन्धनमें जन्म बिताकर यह बाल सफेद हुए हैं, और अन्तिम भेट में भारत भक्ति की वेदी पर प्राण निछावर कर दिये हैं।

कामना से मयूस होकर हर तरह से निराश हो जायंगे उस समय असहयोग के बिना कोई उपयोगी हथियार वह अपने वशमें न पायेंगे ।

दो०—होगा नौकरशाही से भारत में संग्राम ।
आएगा असहयोग ही आखिर उनके काम ॥

पटेल-और आपकी कृपा से अन्त में असहयोग की जय होगी ।

तिलक-हां परमात्मा की इच्छा होगी तो अवश्य ही विजय होगी ।
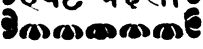
दोहा—जाको राखे साइयां मार न सक्के कोय ।
बाल न बांका करि सके जो जग बैरी होय ॥

गाना ।

सारे जहां में बस हो ईश्वर अगर हमारा ।
बांका न बाल हो गर बैरी जहां हो सारा ॥
गर मित्र ईश्वर है क्या कर सकेंगे दुश्मन ।
तदबीर दुश्मनों की हो जाय पारा पारा ॥
प्रह्लाद को मिटाने में क्या कसर रही थी ।
उसको बचा रहा था भगवान का सहारा ॥
झोंका था राक्षस ने भट्टी में इस कुंवर को ।
पर आग बन गयी थी तत्काल जल की धारा ॥

सुग्रीव के सहाई जब राम बन गये तो।
कुछ कर सका न बाली परलोक को सिधारा॥
तुम भी रखो भय मिटो भगवान का सहारा।
कोई न कर सकेगा फिर कुछ बुरा तुम्हारा॥

सीन ऐक्ट पहला तीसरा

स्थान मंदिर।

(सत्याग्रही भारतीयों का आरती करते हुये दिखाई देना)

आरती-ओ३म् जय जय जय महादेव।

प्रेमी जन को तारे कष्ट निवारे॥

भक्त जनन के सङ्कट छिन में दूर करे, जय जय जय महादेव।

सब के हो दाता, तुम पितु देव प्रिय माता, दीन दुखी तारे॥

॥ दुष्टन पाप हरे, जय जय॥

तुम पर हों बलिहारे हम प्यारे सारे, तुमरी जो श्रद्धा धारे,

॥ बैतरणी को तरे जय जय॥

पहला सत्याग्रही-हे दीन दयाल ! तुम ही सङ्कट के हरण-हार हो, तुम ही हमारी आशाओं के आधार हो, इस समय

हम भारतवासियों के गौरव की नाव अन्याय के मंझदार में डगमगा रही है, हे प्रभु ! इसे किनारे पर लगाओ, वह देखो सामने रौलटबिल रूपी महा तूफान इधर को आ रहा है।

नज्ञ आना ही ना मुमकिन कहीं साहल न हो जाये।
प्रभु यह हमसे मज़हब का कहीं सायिल न हो जाये॥
हमारे उन्नति मारग में कहीं इक सिल न हो जाये।
तुम्हारा नाम लेना भी कहीं मुशकिल न हो जाये॥

दूसरा सत्याग्रही हे कृपा सिंधु, आजहम सत्य धारण करके सत्य मार्ग का प्रण करके, तमाम सङ्कट अपने सिर पर सहन करके तेरे द्वार पर एकत्र हुये हैं, हे प्रभु ! हम दीन दुखियों की पुकार, रौलट बिल राक्षसी मायामय अन्धकार है, अति भयानक अत्याचार हैं, कहीं इससे हमारी रही सही आज़ादी न छिन जाये, कहीं यह भारतकी गौरव युक्त सन्तान को अन्य देशों की दृष्टि में और भी जलील न कर दिखाये। हे राजाओं के महाराजा ! ऐसी आज्ञा किकरे जिससे यह अन्यायी कानून रूपी राक्षस पवित्र भारत भूमि पर पैर न धरने पाए। इस दुखी देश पर अपना सिक्का न बैठाए।

रावण को तुमने मारा है बाली का सीस उतारा है।
पापी राजाओं का बधकर दुर्योधन को महारा है॥
तुम सृष्टि पल में नाश करो इतनी ताक़त और शक्ति है।
भगवान तुम्हारे आगे फिर रौलटबिल की क्या हस्ती है॥

तीसरा सत्याग्रही-हे करुणा सिंधु ! हम संसारी राजाओं से निराश होकर तुम्हारी शरण आये हैं।

जगत के कुचले हुये दुनिया के ठुकराये हुए।
आये हैं द्वार पे तेरे हाथ फैलाये हुये॥
तुम हो राजों के महाराजा सुनों फरियाद को।
कुछ करो चारा कि दुखिया चोट हैं खाये हुये॥

चौथा सत्याग्रही-हे प्रभु ! हम तेरे धर्म्म पुत्र धर्म्म के आज्ञाकारी हैं, तुम्हारी कृपा से सच्चे अधिकारी हैं, हमारे पास धन नहीं, शक्ति नहीं, समर्थ नहीं, केवल सत्य का हथियार "अहिंसा परमो धर्मः" से ही सरोकार है। भगवान ! हमारे सत्य में बल दो कि शुभ काम कर सकें, झूठ और मिथ्याचार से संग्राम कर सकें। हम जो ब्रह्मविद्या में प्रवीण है वही इस तरह पराधीन हैं। चोर नहीं, डाकू नहीं, किसी के धन पर अन्याय से अधिकार करना नहीं चाहते ?

अपनी मेहनत से खाते हैं कोई अपराध नहीं करते।
बेशक आजादी चाहते हैं कोई अपराध नहीं करते॥
हम सारी दुनियां को रोटी होकर निस्वार्थ खिलाते हैं।
उसके बदले में हम स्वयं दुनियां में धक्के खाते हैं॥

(दो मिथ्याग्रहियों का आना)

मिथ्याग्रही-(सत्याग्रही से) क्यों लाला जी, आज दूकान बन्द है ? तुमको तो रात दिन पूजा ही पसन्द है।

सत्याग्रही-आज महात्मा गांधी के सत्याग्रह का अवतार हुआ है, आज भारत सदियों की गहरी निद्रा से बेदार हुआ है, आज पहले पहल हिन्दु मुसलमान अपने भेद भाव को भूल कर शुद्ध हृदय से ईश्वर के झण्डे के तले आए हैं, आज स्वाधीनता के अरुणोदय से स्वराज्य नीति के सात्विक मार्ग ने अपने दर्शन दिखलाये हैं ।

मिथ्याग्रही—हड़ताल की तह में कोई नाराजगी जरूर होगी ।

सत्याग्रही—हां विलायत की रौलट कमेटी ने हमारे लिये कानून नया बनाया है, मरे हुये भारत को मारने का बीड़ा उठाया है ।

मिथ्याग्रही—क्या है वह कानून ?

सत्याग्रही—आरजूओं का ख़ून ।

जो है वतन परस्त वह इतना ज़लील हो ।
उसको दलील हो न वकील और अपील हो ॥

मिथ्याग्रही-मगर हड़ताल किस बात की ?

सत्याग्रही—परमात्मा से प्रार्थना के लिये, व्रत रखकर मन्दिर में उपासना के लिये ।

भगवान से न्याय यह मांगने को आये ।
हाकिम जो हैं हमारे उनको दया सिखाये ॥

मिथ्याग्रही-मगर मांगनेसे क्या कुछ सरकार देने वाली है, सवाली को जगत में सदा पामाली है ।

बात हमारी मानिये पत्थर की लीक।
बिन मांगे मोती मिले मांगे मिले न भीक॥

सत्याग्रही—लेकिन परमात्मा से मांगने में हर्ज नहीं।

मिथ्याग्रही—कितने आश्चर्य की बात है, तीस करोड़ हिन्दुस्तानियों की यह औक़ात है, अपनी मानवी सत्व साहस से क्यों नहीं लेते ?

सत्याग्रही—पराधीन हैं।

मिथ्यग्रही—शक्ति से क्यों नहीं लेते ?

सत्याग्रही—बल नहीं है।

मिथ्याग्रही—खून ख़राबी से क्यों नहीं लेते ?

सत्याग्रही—हिंसा अधर्म है।

मिथ्याग्रही—बग़ावत से क्यों नहीं लेते ?

सत्याग्रही—वफ़ादारी की शर्म है।

मिथ्याग्रही—क्या अत्याचार अपने ऊपर सहे जाओगे ?

सत्याग्रही—हां सत्याग्रही बनेंगे आप दुख उठायेंगे और मन, वचन या कर्म से किसी जीवको न सतायेंगे।

गाना।

सत्याग्रही है नर वही न भय राखे कभी मन में।
न सत छोड़े न प्रण तोड़े जब तक जान इस तन में॥
सितम चाहे कोई ढाले या नस नस छेद कर डाले।
सती यह चोट भी खाले हो बस्तीमें कि हो बन में॥

खड्ग गर सीस पर होवे न उससे भी खतर होवे।
है क्या चिन्ता बसर होते अगर यह उम्र बंबधन में॥
हमेशा जोकि निर्भयहो यह निश्चय जिसका निश्चय हो।
जगतमें उसकी जय जय हो यही शक्ति है सतपन में॥

मिथ्याग्रही-(अपने आपको) अरे ऐसे सत्याग्रह की ऐसी तैसी (दूसरे मिथ्याग्रही से) क्यों भैय्या !

दूसरा मिथ्याग्रही—हां भैय्या !

पहिला मिथ्याग्रही-रौलटबिल जाय जहन्नम में, और यह सब पड़े खाईमें, यारों को तो अपने हलवे मांडे का खयाल है कुज्ज, फज्ज़ और रज्ज़ को लेकर किसी मकान को आग लगायें और शोर शराबे में माल चट कर जायें।
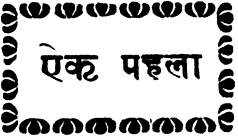
दूसरा मिथ्याग्रही-इन मूर्खों का यह हाल है तो फिर इनकी दौलत हमारा माल है, हमारा तो यह हाल है किन सर्कार की पर्वा है न भाइयों का ख्याल है, माल उड़ायेंगे हम

पहिला मिथ्याग्रही-और पकड़ें जांयगे लीडर, बन्दर की बला तबेले के सिर पर पड़ेगी।

जो कुछ मजा है झूठ में सच में कहां वह रङ्ग है।
बस है बड़ा पाजी वही जिसका खयाले मङ्ग है॥

तीन एक पहला चौथा

स्थान बंगला।

(ओडवायर का भयानक ख़्वाब को दुनियां से खौफ़ज़दा होकर घबराए हुये दाखल होना)

ओडवायर-कैसा भयानक ख़्वाब है, खून की धारा में हजारों ग्रीस बहे जाते हैं, आत्माओं के भयङ्कर स्वरूप लहू से भीगी हुई लाल झण्डियां लिये डराते हैं। बच्चों और औरतों की पुकार से कान बहरे हुये जा रहे हैं, बिना सिर, बिना धड़ बिना टांग के बेशुमार इन्सान मेरी तरफ़ दौड़े आ रहे हैं।

यह अजब करुणामयी इस ख़्वाबकी तासीर है।
चाहिये अब देखना क्या ख़्वाब की ताबीर है॥
एक मैं और कितने दावेदार हैं चिमटे हुए।
कोई दामनगीर है कोई गरेवां गीर है॥

लेकिन अभी तक मेरे ऐहदे हकूमत में कोई ऐसी दुर्घटना नहीं हुई, क्या ऐसा समय भी आने वाला है, नहीं कुछ भी नहीं। सियासत की पेचीदगियों में घिरा हुआ एक मुदब्बिर का दिमाग़ थकावट के प्रभाव से अक्सर ऐसे ख़्वाब देखा करता

है, मगर इन बातों पर ध्यान दिया जाए तो हकूमत करन
कठिन हो जाय कुछ भी हो, पंजाब का सयाह व सफेद मे
हाथ है, डायर जैसा दिलावर जर्नैल मेरे साथ है, पंजाब देखेग
और मैं दिखाऊंगा।

वह नमूना सख्तगीरी का दिखाऊंगा इसे।
अपनी मंशा अपनी मर्जी पर चलाऊंगा इसे॥

(इन्साफ़ का देवता रूपमें दाखल होना)

इन्साफ़-चाहिये कुछ राजनीतिमें दखल अल्ताफ़ का।
खून कर डालो न इस अभिमान में इंसाफ का॥
शुद्ध बुद्धि गर न हो इन्सान तो हैवान है।
राजनीति गर न हो तो राज भी श्मशान है॥

ओडवायर-लेकिन सच्ची राजनीति का आदर्श वहीं दिख
लाया जा सकता है, जहां उसकी खालिस आवश्यकता है।

राजनीति वह चलाऊंगा मैं अब पंजाब में।
लोग देखेंगे न आज़ादी की सूरत ख्वाब में॥

इन्साफ़-परंतु पंजाब के लोग तो वफ़ादार हैं गद्दार नहीं
बहादुर हैं शेखी के रवादार नहीं।

ओडवायर-कुछ भी हो, जो लोग बजाय बुद्धि के मूर्खता
अपील करते हैं, जो दानमें सरकार की तरफ़ से मिली हुई
शहरी आजादी को अशान्ति से जलील करते हैं।

अब उनको मिटाने का वक्त आ गया है।
बल और छल दिखानेका वक्त आ गया है॥

इन्साफ़ बल और हकूमत को इस्तैमाल करने का क्या यही तरीका है।

ईश्वर ने राज दिया है तो कर्त्तव्य करो राजाओं का।
उद्धार करो अपने बल से कौमी स्वदेश सभाओं का॥
बल ही दिखलाना है तुमको बुद्धि का और भुजाओं का।
तो बल कौशल से यत्न करो भारत की शुद्ध आशाओं का॥
उद्धार हो राजा प्रजा का ऐसा भारत में काम करो।
यश लो न्याय और रीति से और ब्रटिश राजका नाम करो॥

ओडवायर-लेकिन जिन लोगों के दिमाग़ जल गए हैं, जो पोलिटिकल रियायतें पाकर कपड़ों से बाहर निकल गए हैं, क्या उनकी तरफ़ आंख बन्द कर लें ?

जिस शक्ति से हमने छोटी कौमों का मान बचाया है।
जिस शक्ति से जर्मन शक्ति को भी नीचा दिखलाया है॥
भारत के सियासी झगड़ों को अब उस शक्ति से जोड़ेंगे।
बन्धन में सब को डालेंगे अब एक न बाग़ी छोड़ेंगे॥

इन्साफ़—क्या आप पवित्र विचारों के स्वामी नेताओं को बाग़ी और राजविद्रोही समझते हैं, लेकिन स्मरण रखिये राजनीति को कुछ वही समझते हैं।

ओडवायर—वह तमाम आदमियों को कुछ समय के लिये

धोखा दे सकते है और कुछ आदमियों को हमेशा के लि
बहका सकते हैं, लेकिन तमाम को हमेशा के लिये अपने म
पर नहीं चला सकते हैं ।

अगर यह सर उठायेंगे तो मैं फ़ौरन दबा दूंगा ।
हो इब्रत जिससे औरों को उन्हें ऐसी सज़ा दूंगा ॥

इन्साफ़-सजा में आपने क्या कुछ कसर छोड़ी है, पा
पाल और तिलक का पँजाब में दाखला बन्द करवा दि
अपने अख्त्यार की जंजीरों को वसीय और मनमानी हकू
के झण्डे को बुलन्द कर दिया, सैकड़ों को बिला वजह द
दी, देसी अखबारों की जबां बन्दी की, स्वदेशी अखबारों
उठानेकी बजाय और दबा दिया, ज़बान और कलम की ब
से कौमी गुरुता को मिटा दिया ।

भारत की शुद्ध उमङ्गों का तुमने ही गला दबाया है
भारत के कई शरीफों को बुलवाया और धमकाया है
इस पर भाइयों को कहते हो भारत सुख और अमनमें है
प्रत्यक्ष जबां पर तो कुछ है, कुछ और तुम्हारे मन में है

ओडवायर—अभी मेरा काम तमाम नहीं हुआ, मग
अप्रैल के मानिन्द पंजाब में कभी फिर ऐसा दिन आयग
मेरे अख्त्यारका खड्ग वह रवानी दिखायेगा कि सियासी ह
का गुब्बार हमेशा के लिये दब जायगा ।
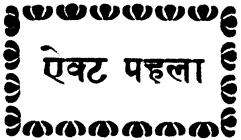
इन्साफ़—लेकिन आपका यश धूल में मिल जायगा

ओडवायर—और सब से पहले आपका गला घोट दिया जायगा।

अदावत न होगी बग़ावत न होगी।
न होगी अगर तुम अदावत न होगी॥

(ओडवायर का इन्साफ़ का गला घोट देना). टौले पर पर्दे का गिराया जाना।

——o——

सीन ऐक्ट पहला पांचवां

दिखावो जल्यां वाला बाग़।

(बच्चे बूढ़े यात्री और शहरी लोगों का मजमा दिखाई देता)

एक—क्यों भैय्या घर से निकलना मना है।

दूसरा—घरसे न निकलें तो दुनियांके कारोबार कैसे चलें

एक-सुना है कि अब सिविल कानूनकी नहीं, बल्कि फौजी कानून की अमलदारी है. और फौजी डायरशाही की तरफ से यह ऐलान जारी है।

दूसरा—क्या है वह ऐलान ?

एक—एक पुलिस वाला कह रहा था, कि शहर में रहने वाले किसी आदमी को शहर छोड़ने की आज्ञा नहीं ८ बजे

धोखा दे सकते है और कुछ आदमियों को हमेशा के लिये बहका सकते हैं, लेकिन तमाम को हमेशा के लिये अपने मार्ग पर नहीं चला सकते हैं।

अगर यह सर उठायेंगे तो मैं फ़ौरन दबा दूंगा।
हो इब्रत जिससे औरों को उन्हें ऐसी सज़ा दूंगा॥

इन्साफ़-सजा में आपने क्या कुछ कसर छोड़ी है, आपने पाल और तिलक का पंजाब में दाखला बन्द करवा दिया, अपने अख्त्यार की जंजीरों का वसीय और मनमानी हकूमत के झण्डे को बुलन्द कर दिया, सैकड़ों को बिला वजह सजा दी, देसी अखबारों की जबां बन्दी की, स्वदेशी अखबारों को उठानेकी बजाय और दबा दिया, ज़बान और क़लम की बन्दिश से कौमी गुरुता को मिटा दिया।

भारत की शुद्ध उमङ्गों का तुमने ही गला दबाया है।
भारत के कई शरीफों को बुलवाया और धमकाया है॥
इस पर भाइयों को कहते हो भारत सुख और अमनमें है।
प्रत्यक्ष जबां पर तो कुछ है, कुछ और तुम्हारे मन में है॥

ओडवायर—अभी मेरा काम तमाम नहीं हुआ, अगर ६ अप्रैल के मानिन्द पंजाब में कभी फिर ऐसा दिन आयगा तो मेरे अख्त्यारका खड्ग वह रवानी दिखायेगा कि सियासी उमङ्गों का गुब्बार हमेशा के लिये दब जायगा।
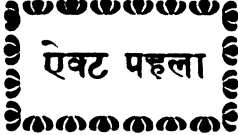
इन्साफ़—लेकिन आपका यश धूल में मिल जायगा।

ओडवायर—और सब से पहले आपका गला घोट दिया जायगा।

अदावत न होगी बग़ावत न होगी।
न होगी अगर तुम अदावत न होगी॥

(ओडवायर का इन्साफ़ का गला घोट देना). टीले पर पर्दे का गिराया जाना।

——o——

सीन **ऐक्ट पहला** पांचवां
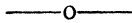
दिखावो जल्यां वाला बाग़।

(बच्चे बूढ़े यात्री और शहरी लोगों का मजमां दिखाई देता)

एक—क्यों भैय्या घर से निकलना मना है।

दूसरा—घरसे न निकलें तो दुनियांके कारोबार कैसे चलें

एक-सुना है कि अब सिविल कानूनकी नहीं, बल्कि फौजी कानून की अमलदारी है. और फौजी डायरशाही की तरफ से यह ऐलान जारी है।

दूसरा—क्या है वह ऐलान ?

एक—एक पुलिस वाला कह रहा था, कि शहर में रहने वाले किसी आदमी को शहर छोड़ने की आज्ञा नहीं ८ बजे

के बाद जो गली या बाजार में मिलेगा वह गोली से मार दिया जायगा।

दूसरा—यार ऐसा सख्त ऐलान हो और कोई भी न सावधान हो ?

एक—यही तो मैं कहता हूं, कि ऐसा ऐलान तो घरमें, बार मे, गली में, बाजार में हर एक जगह लगना जरूरी था।

दूसरा—बिलकुल जरूरी था।

एक—यही तो मैं भी कहता हूं, कि यह सब लोग ऐलान से बाखबर होते, तो इनका सिर फिरा था कि यहां आन कर एकत्र होते।

दूसरा—जब घर से बाहर निकलना भी सरकार का ना पसन्द होगा तो किसी प्रकार की सभा करना भी बन्द होगा।

एक हरे हरे।

अब तो अपने घर में ही ऐसा अनादर हो गया।
रहना सहना था कठिन जीना भी दूभर हो गया॥

(डायर का मय अपने सिपाहियों के आना)

डायर-(क्रोध में मजमा को देख कर) उफ़ इन पाजियों ने मेरी आज्ञा को मुत्लक़ अङ्गीकार नहीं किया मेरे ऐलान का ज़रा विचार नहीं किया, शायद इन्हें यह खबर नहीं कि डायर कितना सङ्ग दिल है उसके क्रोधसे बचना कितना मुशकिल है। मौत के मुंह से साफ़ बच जाना आसान है, लेकिन मेरे गुस्से की आग से जान बचाने का विचार अज्ञान है।

आह भी करने न पाए बेज़बानों की तरह।
भून डालूंगा इन्हें भट्टी में दानों की तरह॥
खुशकोतर कोई नहीं बचने का मेरे कोप से।
दाह होगा हिन्दियों का आज इंग्लिश तोप से॥

राजनीति—(देवी रूप से प्रगट होकर) ठहरो, मन के उमड़े हुए विचारों को क्रोध अग्नि के हवाले मत करो जिन निर्दोषों को तुम गोलियों का निशाना बनाना चाहते हो, जिनको मिटा कर अपनी नेकनामी और शोहरत का कल्पित किला बनाना चाहते हो, जानते हो वह कौन है ?

डायर—कौन है ?

राजनीति—

यह वह हैं जिनसे जमन को हुई रुसवाई है।
जङ्ग यूरुप में जिन्होंने वीरता दिखलाई है॥
तुम समझते हो कि जिन्हें बागी हैं ग़द्दारोंमे हैं।
वह तुम्हारे जार्ज पञ्चम के वफ़ादारों में हैं॥

डायर—मेरा फैसला आखरी है।

राजनीति—नहीं क्रोधमें मनुष्य अन्धा हो जाता है अच्छा बुरा कुछ नज़र नहीं आता है। किसी राज अधिकारी से फैसला करावो, मेरी नहीं तो किसी और मित्र की सलाह मानों।

तुम्हें शक्ति मिली है तो न इस शक्ति पै इतराओ।
अभी गर्मी उतरने दो ज़रा ठण्डी हवा खाओ॥
हकूमत की खुमारी में कहीं धोखा न खा जाओ।
संभल कर पैर धरना फिर कहीं पीछे न पछताओ॥

डायर—अगर इन्हें सज़ा न दूंगा, तो बग़ावत का धीआं जोश खाकर खतरनाक आग का शोला हो जायगा अभी फुन्सी है नश्तर से न चीरूंगा तो फोड़ा खादबा हो जायगा।

अभी अच्छा है यह गन्दा मादा दूर होजाये।
न रस्ते रस्ते आखर को कहीं नासूर हो जाये॥
अभी से नाकाबन्दी हो अभी छोटा सा चश्मा है।
अगर बढ़कर हुआ दरिया तो फिर मुशकिलसे रुकना हैं॥

राजनीति—लेकिन जिस तर्ज पर तुम हकूमत को लाते हो, जिस नीति से तुम प्रजा पर रोब का सिक्का बैठाना चाहते हो, वह तमाम मुहज्जब देश ना पसन्द करेगा भारतवासी शिकायत में वह आवाज़ बुलन्द करेंगे जो आकाश तक जायेगी और विश्वपति के सिंहासन को हिलायेगी।

तोप से यह तेज होगा और शोला आग का।
क्रोध बढ़ता है दबा देने से काले नाग का॥

डायर—यह कायर, बुज़दिल, शक्तिहीन क्या कर सकते हैं।

राजनीति—कर सकते हैं, शारीरिक बल से नहीं, बल्कि आत्मिक शक्ति से इसका इंतकाम लेकर छोड़ेंगे।

पुत्र योद्धाओं के हैं ऋषियों की यह सन्तान हैं।
क्या हुआ गर आज ऐसे बेसरो सामान है॥
जिस्म की ताक़त में माना हीन हैं मजबूर हैं।
आत्मिक बल से मगर संसार में मशहूर हैं।

गाना ।

यह प्रजा राज की जड़ है इस पर सब बोझ पड़ा है ।
मत काटो जड़ को भाई इस पर ही राज खड़ा है ॥
यह महल थियेटर खाने, इनके भण्डार खज़ाने ।
हैं दिये सभी परजा ने इसका उपकार बड़ा है ॥
क़ायम यह नहीं ज़माना, है कठिन समय भी आना ।
परजा को नहीं दुखाना आगे भी काम पड़ा है ॥
युक्ति से कदम उठाना आगे नहीं पैर बढ़ाना ।
कहीं बीच नहीं गिर जाना देखो इस तर्फ़ गढ़ा है ॥

डायर-यह कुछ भी हैं तो भी महकूम हैं, उन्होंने एक मेरे जैसे हाकिम के हुक्मको अदूली की ठोकर से ठुकरा दिया है, गुस्ताखी और बे अदबीसे मेरे सोये हुये क्रोधको जगा दिया है।

तौहीन की उन्होंने डायर दलेर की ।
गोया हंसी उड़ाई है गीदड़ने शेरकी ॥

राजनीति-परंतु, बे हथियार पर वार किसी भी धर्म के अनुसार नहीं । तहज़ीब ऐसे वह शियाना बर्ताव की रवादार नहीं ।

कहां की है दलेरी जो किसी को बे खता मारा ।
यह खुदही मररहे हैं इनको गर मारा तो क्या मारा ॥

डायर-यह बे ख़ता नहीं कसूरवार हैं ।

राजनीति-तो पहले इन्हें मुंतशिर करनेका यत्न करो । कारण कि ये बे हथियार हैं ।

डायर-अब इनको कोई मौक़ा नहीं दिया जायगा, जो भी यहां मौजुद है वह ज़रूर किये की सज़ा पायेगा ।

सूरज अगर इधर का उधर से निकल आये।
तो भी न इरादा मेरा यह टूटने पाये॥

राजनीति-तो याद रखो, आइन्दा जब दुनियां की तवारीख लिखी जायगी तो जहां जङ्ग यूरुप की खूंरेजीका जिक्र आयेगा वहां पञ्जाब की यह करुणा जनक घटना भी अनीतिकी सुर्खी के नीचे खूनी कलम से लिखी जाएगी।

चलो मत तुम इस राह में सर उठाकर।
दुखी होगे तुम भी दुखी को सता कर॥
उड़ेंगी बड़ी दूर तक उस के छींटे।
नया रङ्ग लाओ न तुम खूं बहा कर॥

डायर-कुछ भी हो, मैं अपनी ताक़त का ज़रूर इस्तेमाल करूंगा, अपनी बन्दूक और तलवार से इन सब को पामाल करूंगा।

राजनीति—जानते हो, बादशाह ने तुम्हें वह बंदूक और तलवार किस लिये दी है।

डायर—किस लिये दी है?

राजनीति—कि इन शस्त्रों से दुखिया और दीन पर अत्याचार न होने दो, धर्मात्माओं पर पापियों का वार न होने दो, प्रजा को दुश्मन के हमलों का शिकार न होने दो।

जानता है यह तेरी तलवार क्या करने को है।
दुष्ट लोगों के बदन से सर जुदा करने को है॥
वे कसों और रोगियों की यह दवा करने को है।
यह प्रजा के दुश्मनों का सामना करने को है॥
गर उठाया उसको परजा पर चलाने के लिये।
काल की तलवार है तुझ पर भी आने के लिये॥

डायर—लेकिन जो प्रजा बग़ावत करे ?

राजनीति—क्या यह लोग बग़ावत कर रहे हैं, भाइयों का मिल बैठना, एक दूसरे को अपना दुखड़ा सुनाना क्या बग़ावत है, जिनको सरकार से दोस्ती की उम्मेद है तुम्हें उनसे बग़ावत है।

यह शख़्स नहीं हैं इनसे यह आशा सब ख़याली है।
बग़ावत क्या करेगा वह कि जिसका पेट ख़ाली है॥

डायर—तुमको इसकी क्या ख़बर है, फ़ौजी कानून राजनीति से जुदा हैं।

राजनीति—तो परमात्मा के लिये दया करो।

डायर—एक फ़ौजी आदमी से दया की उम्मेद ?

क्या रहम की उम्मेद है मेरी जबान से !
ठण्डक की है उम्मेद तुम्हें आफ़ताब से।

राजनीति—परमात्मा का ख़ौफ़ करो।

डायर—परमात्मा का ख़ौफ़ गिरजे की कहानी है, यह मैदान जङ्ग है यहां सिर्फ हमको अपनी शुजाअत दिखानी है।

राजनीति—किसी का भी भय नहीं ?

डायर—भय कुछ शय नहीं।

राजनीति—क्या तुम्हें परमेश्वर का भी डर नहीं ?

डायर—यह सोचने का अवसर नहीं।

फ़र्ज है यह मुदब्बर का कि वह अच्छा बुरा सोचे।
बस इतना काम फ़ौजी का है वह दुश्मनके पर नोचे॥
अभी इसमें मैं अपना फ़ैसला तुमको सुनाता हूं।
नज़ारा कत्ले खूं का देखना हो तो दिखाता हूं॥

फ़ायर—(फ़ायर की आवाज़ पर) फ़ौजी सिपाहियों का निहत्थे शहरियों पर गोलियों की बौछाड़ बांधना, भागते हुये लोगों का गोलियां खाकर गिरना, सैकड़ों आदमियोंका जख्मी होना और मरना।

॥ ड्राप ॥

——o——

सीन ऐक्ट दूसरा पहला

जल्यां वाला बाग़।

अंधेरी रात में बे शुमार जख्मी और मुर्दा बच्चे, जवान और बूढ़ों का धर्ती पर पड़े हुए दिखाई देना, भगवान कौशका इस भयानक दृश्यके बीच में घायल पति का मर जाने पर रखकर विलाप करते हुए नज़र आना।

गाना।

दुखी रो रही है यह अबला बेचारी।
खबर ली न कुछ नाथ तुमने हमारी॥

कहां छोड़ कर मुझको जाते हो प्यारे।
छुरी से कठिन है जुदाई तुम्हारी॥
न बे रहम कातिल को कुछ रहम आया।
कमाई जनम भर की लूटी है सारी॥
न जल्लाद को मौत थी याद अपनी।
है किसका हमेशा रहा हुक्म जारी॥
उजाड़ा मुरादों का यह बाग़ मेरा।
न कातिल बर आईं मुरादें तुम्हारी॥
अय कातिल हमेशा हो नाशाद तू भी।
मैं यह शाप देती हूं विधवा दुखारी॥

रत्न देवी—(जवानो) लुट गई, उजड़ गई, बर्बाद होगई।

बाग़ आशाओं का है बर्बाद मेरा हो गया।
आज दुनियां में मेरी हाय अंधेरा हो गया॥
मार डाला मुझको जालिम मौत को बेदाद ने।
लूट ली अनमोल यह पूंजी मेरी जल्लाद ने॥

प्राणनाथ! मैं यह जानती कि मेरा फूला फला हुआ खुशियों का बाग़ यकायक अत्याचार की गर्म लू से उजड़ जायगा, तो तुमको कभी आज घर से बाहर न आने देती।

जानती थी मैं तो इतना न्यायशाली राज है।
क्या ख़बर थी ओडवायर बादशाही आज है॥
मैं समझती थी ज़माना है अमन आराम का।
क्या खबर थी हुक्म होगा आज कत्ले आम का॥

परंतु मैं तुम्हारी वीरोचित मृत्यु पर शोक नहीं करूंगी, तुम्हें जन्म देकर जननी आज धन्य हुई। वीर पति तुम्हारी पत्नी आज धन्य हुई। तुम भाग्यशाली हो कि कर्त्तव्य कुरुक्षेत्र में

अपने प्राणों को आहुती देकर भवसिंधु से पार होगए, देश भक्ति पर मर मिटने वाले भाइयोंका साथ देकर हर्ष सहित हमेशा की नींदमें सो गए।

फलेगा ऐसी बलि से अब उम्मेदों का।
यह रङ्ग लायेगा इक दिन लहू शहीदों का॥

अय मेरे प्राणपतिका साथ देने वाले मेरे स्वदेशी भाइयो, डायर ने तो अति नीच काम करके स्वाधीनता की मूर्तिका खण्डन किया है, परंतु तुमने आज स्वाधीनता की ज्योति को और भी प्रज्वलित कर दिया है। आज तुमने अपना पवित्र खून बहा कर हिंदू मुसलमानों की एकता को अखण्ड करने का यश प्राप्त किया है। इस जल्यां वाले उजाड़ बाग को अपने प्राण छोड़ कर कौमी जगन्नाथपुरी बना दिया है। आज तुमने आजादी के उद्योग का एक नया प्रकरण आरम्भ करके दिखा दिया है।

गाना।

भाईयो नहीं है लागा यह बे कफ़न तुम्हारा।
है पूजने के लायक पावन बदन तुम्हारा॥
दिन आज का यह होगा त्यौहार एक कौमी।
बैकुण्ठ को हुआ है इस दम गमन तुम्हारा॥
जाया लहू तुम्हारा जाने का यह नहीं है।
फूले फलेगा इससे देशी चमन तुम्हारा॥
खुद मरके जिस्म कौमी में तुमने जान डाली।
जाति का है यह जीवन गोया मरण तुम्हारा॥
सब भक्तियों से बढ़कर उत्तम है देश भक्ति।
छुटा है बाद मुद्दत आवागमन तुम्हारा॥

इतिहास में रहेंगी कुर्बानियां तुम्हारी।
तुम पर फ़ख़ करेगा प्यारा वतन तुम्हारा॥
(चन्द एक ख़ाकी वर्दी वालों का आना और लहाशों की कीमती जेवर उतारना)।

आवाज़—(हर तरफ से) हाय, हाय, पानी, पानी, आह आह!

रत्न देवी—(ख़ाकी वर्दी वालोंको देखकर) हाय यह कौन! क्या यम के दूत इन देश भक्तों के प्राण लेने आये हैं नहीं यह तो किसी और ही मार पर ललचाए है। यह तो मरे हुए बेबस और बेकस, घायल बदन और नेकफन लहाशों के जेवर और नकदी निकाल रहे हैं। पापके अन्धेरेमें अंधे हुए धर्म की आंखों में धूल डाल रहे हैं, क्या मनुष्य इतना भी निर्दयी हो सकता है? क्या इस तरह जान बूझ कर कोई अपनी राहमें कांटे बो सकता है, अरे नीच मनुष्यो!

भाई तो मरते हैं और तुमको पड़ी है माल की।
याद क्या आती नहीं है तुमको अपने काल की॥
पाप की दौलत को लेकर अन्त को पछतावोगे।
ले गए जब यह न इसको तुम कहां ले जाओगे॥

आवाज—(ज़ख़्मी आदमियों की) आह, पानी, पानी।

रत्नदेवी मूर्खो मनुष्यत्व का सन्मान करो, दुखिया कालकी विकाल भुजाओंमें जकड़े हुए अपने इन भाइयों पर पहसान करो। लोक और परलोक को सुधारना है, तो कुछ उपकार कर जाओ। प्यासे मर रहे हैं इनको पानी पिलाओ।

वरना यह पैसा खा लोगे फिर किसको खाने जाओगे।
तुम टुकड़ा टुकड़ा मांगोगे दर दर के धक्के खाओगे॥

पापी यह होंठ तुम्हारे भी इक दिन पानी को तरसेंगे।
तुम मर कर पानी मांगोगे ऊपर से पत्थर बरसेंगे॥

बिस्मिल-(एक करीबउलमर्ग का खाकी वर्दी से) अरे भाई तुम कौन हो जाओ ? मेरा एक संदेशा ले जाओ मेरी माताको पहुंचाओ और कहो:—

अय माता आज कितना यह नसीबा खुश तुम्हारा है।
कि अपने प्यारे बेटे को वतन पर तुमने वारा है॥
यह कुर्बानी कसौटी है वतन घिस कर खरा होगा।
हमारे खून से स्वराज का बूटा हरा होगा॥

खाकी-छित चुप रहो, जबान बन्द करो।

बिस्मिल-अरे भाई ! क्या तुम्हारा कोई धर्म ईमान नहीं ? तुम्हारा कोई खुदा नहीं, भगवान नहीं, तुमको रहम का सबक किसी ने नहीं पढ़ाया ? क्या किसी दर्दमन्द दुखिया पर तुम को कभी तर्स नहीं आया जाओ मेरे भाइयों तक यह पैगाम ले जाओ, मेरे भाइयों को कह देना :—

मैं तब समझूंगा तुम मेरी भुजा और सहाई हो।
मैं तब समझूंगा तुम जननी के जाए मेरे भाई हो॥
ज़रूरत प्यारे भारत को पड़े जब नौ जवानों को।
तो देना देश सेवा में आहुति अपने प्राणों को॥

खाकी वर्दी-अरे सिड़ी सौदाई अभी तक तेरी मौत नहीं आई।

बिस्मिल-अरे भाई देखो, मेरे शरीर पर जेवर हैं, जेब में नकदी है, तुम अपनी जेब भर लो,परन्तु इन सूखे हुए बिस्मिल लबों को दो बूंद पानी टपका कर तर करदो।

याद है कुछ एक दिन भगवान के घर जाओगे।

क्या हुआ गर एक नेकी भी यहां कर जाओगी ॥
खाकी वर्दी-छिन,फिर बोलेगा तो ज़बान काट ली जायेगी।

(जाना खाकी वर्दीवालोंका जेवर उतार कर)

बिस्मिल-आह जालिम ने पानी न दिया।
निर्दयी इंसान को क्या जाने यह क्या होगया।
हम नसल इंसान उसको एक भुंगा हो गया ॥
नाम पहलेही न था अब रहमका यह हाल है।
एक कवा जलका भी अफ़सोस मंहगा होगया ॥

(प्राण छोड देना)

रत्नदेवी-प्यासा मर गया, क्या यह सब एक बूंद पानी को तरस २ कर प्राण छोड देंगे। अब मेरा कर्त्तव्य क्या है, अब पावन धनीं को प्राणनाथ को तकिया बनाऊं, कुयें से साड़ी भिगो कर ले आऊं और इन प्यासे भाईयोंको पानी पिलाऊं। (कुयेंमें लटका कर और साड़ी तर करके ज़ख्मी और बिस्मिल भाईयों के हलक़ में पानी टपकाना)

कब मैं तुमको देख सकती हूं अब भाईयो क्लेश में।
जान देकर जान डाली तुमने अपने देश में॥

(आवाज पर रत्नदेवी के पति को रूह का नमूदार होना)

रूह-धन्य हो, धन्य हो, हे देवी जन्म भूमि भी तेरे जैसी वीर बाला को जन्म देकर आज धन्य हुई।

किया है नाम जिन्दा तूने मेरा सतवती हो कर।
मिला है स्वर्ग मुझ को भी सती तेरा पति होकर॥
सती तेरे ही सतपन का जो है परताप सारा है।
कि मैंने आज अपने देशका कर्जा उतारा है॥

रत्नदेवी-जाओ, प्राणनाथ आनन्द सहित स्वर्ग में बास करो, परमानन्द रूपी क्रीड़ा भवन में रस रास करो मैं तुम्हारी हूं तो शीघ्र ही तुम्हारी शरण में आऊंगी। हृदय की अग्निकी तृप्ति करनेवाला सुखदाई दर्शन पाऊंगी।

वहां तुम ईश्वर को सब मेरा दुखड़ा सुना देना।
यह हत्याचार डायर ओडवायर का बता देना॥
कहीं आनन्दमें फंसकर वतनको भूल मत जाना।
सिफ़ारिश करके मजलूमोंको तुम इंसाफ करवाना॥

रूह-हे देवी, भारत निवास के सन्मुख स्वर्ग का बास भी नाचीज़ है, स्वर्ग की हर एक खुशी भारतके हर एक दुख की भी कनीज़ है, जब तक जन्मभूमि का उद्धार न होगा, भारतसे न्याय का इकरार न होगा तब तक हमारी आत्माओं को क़रार न होगा।

भारत में फिर जन्म लें बस यही कामना है।
भारत में जन्म लेना वैकुण्ठ से सवा है॥

रत्न देवी-हे स्वामी, मुझे क्षमा करना कि मैं इस संसार में अकेली रह गई, मैं अभी जिन्दा रहूंगी अभी दुनियां को अपने सुहाग की फूटी हुई चूड़ियां दिखाऊंगी। डायर के अनर्थरूपी खंजर से छिला हुआ घायल हृदय समुन्दर पार ले जाऊंगी। मैं भारत की स्त्रियों के लिये आदर्श होकर देश भक्ति का सबक सिखाऊंगी, और देश सेवा में अपने पतियों को बलिदान करने के लिये अपनी बहनों का साहस बढ़ाऊंगी।
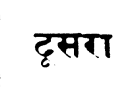
आज से कर्त्तव्य में दृढ़ करके जब अड़ जायेंगी।
औरतें मर्दों से भी इस काम में बढ़ जायेंगी॥
अब करेंगी कद्र सब बहनें मेरे उपदेश की।

अपने पतियों को खुशी से भेंट देंगी देश को ॥
स्वामी-अब कृपा करके मेरे विरहका कुछ क्लेश न करना।
रत्न देवी-स्वामी पति विरह से बढ़कर पत्नी के लिये और कौनसा क्लेश है।

गाना।

पति बिन सूना है संसार, पति बिन ॥ टेक ॥
पत से पत है पत से गत है, और पत बिन लाख विपत है।
पति बिन दुनियां है अन्धकार। पति बिन सूना।
पत से मत है पत को जत है, पत्नी का धन पातीव्रत है।
पति बिना जीना है धिक्कार। पति बिन सूना।
(आवाज पर रूह का ग़ायब होना और रत्न देवी का मुर्छित होना।)

सीन दूसरा दूसरा

स्थान अंग्रेजी डाक्टर का बंगला।

(डाक्टर साहब का मुंह में चुरट लिये हुए मेज पर नोट और रुपये गिनते हुए नजर आना। सामने १९१९ ई० के कैलेण्डर में अप्रैल का महीना दिखाई देता है)

गाना।

पैसे की दुनियां सारी है।
पैसे की यह सर्दारी है॥
पैसे का सिक्का जारी है।

दुनियां पर सत्ता तारी है, बस अब तो जीत हमारी है।
पैसे की है सब लूट, पैसे की बूट सूट।
यह बंगला यह बाड़ी है॥
यह फ़ाइन ओल्ड, वाइन कोल्ड, है पैसे की बहार।
यह आबदार विस्की, सोहबत ये यंग मिसकी।
पैसेकी ताबेदार है पैसे की बहार॥

डाक्टर-(जबानी) अच्छा दौलत दौलत, भी अजीब चीज है। इसको अपनी तरफ खेंचनेकी हमें तमीज है, दौलत वह वेतार की बर्क है, जो आसमान की खबरें लाती है, दौलत दुनियां में रुतबा और शान बढ़ाती है, दौलत की चाबी से मुश्किल से मुश्किल उलझन का ताला खुलजाता है। दौलत का मिकनातीसी असर, इज्जत, आराम गरूर और हर एक दुनियावी खुशी को अपनी तरफ खेंच लाता है। दौलत दुनियां की सल्तनत कराती हैं, दौलत बड़ी २ मशीनों की ताकत वाली कौम को नीचा दिखाती हैं।

हैं काम सब तमाम जो टीमें दाम हैं।
दुनियां के सब गरीब हमारे गुलाम हैं॥
हम पैदा हैं जहां में करने के वास्ते।
पैदा हुए गुलाम हैं मरने के वास्ते॥

[खानसामा का आना और पेग देना]

खानसामा-हजूर जाम नोश फर्माइये।

डाक्टर-(पी कर) वैल अब तुमको छुट्टी है जाओ।

खानसामा हजूर कहां जाऊं, शहर में जाने वाला तो गोली से भुन जाता है।

डाक्टर-बाग़ी पर गोली चलाना चाहिये,तुमलोग बाग़ी है।

खानसामा-हजुर हम बाग़ी नहीं, हम अलबत्ता पेट से भूके हैं।

यह पेट खाली है क्या करें हम यह पेट मजबूर कर रहा है।
बडी अजीयत से खुश्क टुकडा हलक से नीचे उतर रहा है॥
तुम्हारी सेवा ही करते करते हमें जमाना गुजर गया है।
बहा किनारोंसे अब गुजर कर किपात्र धीरज का भर गया है॥

डाक्टर-तुम बड़ा नालायक है।

खानसामा-तो भी वफादार हैं।

डाक्टर-फिर तुम्हारा लीडर लोग बग़ावत क्यों करता है?

खानसामा-हजूर, जो स्वराज्य मांगनेवाले हमारे लीडर हैं वें बिल्कुल बेजरर हैं, खून खराबा करनेवाले तो चन्द एक कौमी ग़द्दार हैं, जिनके साथ निर्दोष भी जुल्म का शिकार हैं, सरकारके क्रोध से निरापराधियों पर भी अनर्थ का गोला चल रहा है, सूखे के साथ गीला भी जल रहा है।

कम्पौंडर व एक जख़्मी हिंदोस्तानी का आना।

कम्पौंडर-हजूर यह एक घायल नौजवान है और इलाज का ख्वाहां है।

डाक्टर-किससे घायल हुआ?

या मुसाफिर यह बेचारा शहर में आ या हुआ।
जा रहा था रेल पर मृत्यु का उकसाया हुआ॥
खौफ़ के मारे स्टेशन पर रवाना हो गया।
रास्ते में गोलियों का पुर निशाना हो गया॥

डाक्टर-देखो, तुम लोग हमारा दुश्मन है, हम तुमसे बद

है अगर इसको शफ़ाख़ाने में रखोगे, तो हम इस को ज़हर दे डालेगा, जहर दिलवाना हो तो यहां रखो और इलाज कर वाना है तो गांधी के पास ले जाओ।

इस को मेरे सामने से बस अभी ले जाइये।
साथ बदकारों के ऐसी हो बुराई चाहिये॥

जख्मी-हजूर आप डाक्टर हैं, आपको चाहिये कि हर एक से आप का बर्ताव दोस्ताना हो, इलाज करना आपका कर्त्तव्य है, मरीज अपना हो या बेगाना हो।

बिन भेद भाव सब लोगों को ज्ञानी उपदेश सुनाता है।
दोनों बद और शरीफ़ों पर बादल पानी बरसाता है॥

डाक्टर-दुश्मन का इलाज करनेवाला बड़ाही कम अक्ल है

ज़ख्मी-तो फिर दुश्मन के जख्मी सिपाहियोंका इलाज करना समर (मैदान जङ्ग) नीतिमें क्यों उचित माना है, युद्धस्थल में गोली चलानेवाले, सन्मुख युद्ध करने को तलवार उठानेवाले शत्रु का भी इलाज करना जब राजनीतिमें मुनासिब जाना है, तो प्रजा अगर फ़ौजी ताक़त का निर्दोष निशाना बन जाए, और वह अपना इलाज कराने आये तो इलाज कराने वाला मूर्ख है या दाना, बल्कि उसका इलाज करना वैद्य का मुख्य कर्म है, नीति का विशेष धर्म है।

बने हैं यह शफ़ाख़ाने हमारी ही भलाई से।
मजे करते हो तुम भी तो हमारी ही कमाई से॥
हमारीही यह माया और हम निराश फिरते हैं।
हमारे जर के गोले और हमारे सर पे गिरते हैं॥

डाक्टर-जय महात्मा गांधी की जय बुलाते हो, तो सहायता के लिये उसके पास क्यों नहीं जाते हो?

जख्मी-गांधी की जय बुलाना क्या सुजमाना है ? गांधीको आपने किस तरह घृणा का पात्र गर्दाना है। गांधी कोई चोर नहीं, डाकू नहीं, खुनी नहीं, रहज़न नहीं, वह सच्चा देशका हितकारी है, वह भारत का सच्चा पुजारी है दीन का, अनाथ के सहारे का सहारा और परोपकारी है, वह तो हमें केवल पवित्र देश भक्ति का उपदेश सुनाता है, वह तो हमें हिंसा को त्याग कर अहिंसा मार्ग पर चलाता है, उसी को हम पर दया विशेष है, और यह उसीका उपदेश है, यह उसीके उपदेश का नतीजा है कि—

अपने सिर पर रख लेते हैं हिंसा करने की चाह नहीं।
यह गोली तो क्या वस्तु है पर गोले खाकर आह नहीं॥

डाक्टर-हम ज्यादा सर दर्दी नहीं मांगता, तुम्हारा इलाज करना हमारे दस्तूर के खिलाफ है और जवाब साफ है।

जख्मी-हजुर आप चिकित्सा करनेको मजबूर नहीं लेकिन याद रखिये तहजीब पर नाज करनेवालोंका यह दस्तूर नहीं।

डाक्टर-तुम तहजीब को क्या जान सकता है ?

जख्मी-हजूर ! जब हमारी तहजीब का सूर्य्य उन्नतिके आकाश पर जगमगाता था, जब हमारी तहजीब का झंडा तरक्की के शिखर पर लहराता था तो उस वक्त यह मिथ्या व्यवहार न था। रावण के खास वैद्य सुषेण ने रावण के शत्रु रामके भाई लछमन को मौत के मुंह से बचाया था, महाभारत युद्धमें भीष्म पितामह ने शिखण्डी को पिछले जन्म का औरत समझ कर तीर नहीं चलाया था, यह हमारी तहजीब है और यह तुम्हारी तहजीब है।

पापी भी कुचला जाता है धर्मी से भी नहीं टलती है।
औरत की गर्दन कटती है बच्चे पर गोली चलती है॥
यह है तहजीब मगर बिजली जो सबके पीछे फिरती है।
मन्दिर हो मस्जिद या गिर्जा हर एकके ऊपर गिरती है॥

डाक्टर-बस हम ज्यादा नहीं सुनेगा, ले जाओ इस सिड़ी सौदाई मरीज को ले जाओ। (जाना)

जख्मी-जाइये हमारी कमाईके पसीने से बनाए हुए गर्म गदेलों पर लम्बी तान कर सो जाइये, मैं मरूंगा या जीऊंगा, लेकिन तुम्हारा यह बर्ताव संसारके इतिहासमें एक शिक्षाप्रद यादगार रहेगा, जिसको सुनकर और मुंह में उंगली देकर अन्य जाति का हर एक जन भी यही कहेगा।

यह भारत है जो भूका मर रहा है।
और इसपर भी खजाने भर रहा है॥
है इस बर्ताव पर हौसला यह।
जफाओं पर वफ़ायें कर रहा है॥

आकाशवाणी-शान्त हो! भारत वीर चिन्ता दूर कर, इस अभिमानी डाक्टर का कहना सत्य होगा, गान्धीके नामसे भारत में वह आलीशान भण्डार होगा, और जो अपने बर्तावमें इतना उदार होगा कि बिना भेद भाव सुजन और दुश्मन यहूदी और ईसाई सब इस औषधालय से फैज पायेंगे और भारत की उदारता को सराहेंगे।

सिखाती हैं यह बातें इनको दुनियां में बड़ा होना।
हमें आएगा इन बातोंमें पांओं पर खड़ा होना॥

—(:०:)—

सीन एक दूसरा तीसरा

रास्ता ।

(एक हिन्दोस्तानी बच्चे का दाखिल होना गीत गाते हुए)

गाना ।

यह आर्जू है मेरा भारत पे वार करदूं ।
तन मन जिगर कलेजा सब कुछ निसार करदूं ॥
ऐसी हवा चलाऊं जाय यह दिन खिजांके ।
भारतके गुलसितांमें मौसम बहार करदूं ॥
ईश्वर दे मुझको हिम्मत साहस दे हौसला दे ।
भारत की उन्नति की नावों को पार करदूं ॥
यह आस्तीं गुलामी की क़ौम के बदन पर ।
पहनी जो मुद्दतों से तार तार करदूं ॥
ऐसी करूं तपस्या स्वराज्य लेकर छोड़ूं ।
मिट जाए बे करारी दूर इन्तजार करदूं ॥

(एक साहब का दाखिल होना)

साहब ए यू, तुम नहीं जानता कि मार्शल ला है ।
यह है कानून जारी आज कल भारत के शहरों में ।
तुम्हारी जिंदगी है कैद इन संगीन पहरों में ॥
बच्चा—हां इतना जरूर जानता हूं कि आज हर एक

शहरों की आजादी पर फ़ौजी कानून की मोहर लगी हुई है, भारत की पवित्र भूमि पर अन्याय और अत्याचार की क़िस्मत जगी है।

आज पानी अपनी मेहनत का पसीना हो गया।
आज मुश्किल हम वफ़ादारों का जीना हो गया॥

साहब—तो इस तरह निडर होकर क्यों फिर रहे हो ?

बच्चा—क्योंकि हमारे मनमें पापका लेश नहीं, यह तो बताइये क्या इस धर्ती पर हमारा कुछ अधिकार नहीं, यह भूमि हमारा देश नहीं ?

साहब—अच्छा तुमने हमको सलाम क्यों नहीं किया ?

बच्चा—(अपने दिल में) मुझे मालूम न था कि आप सलाम के इस कद्र भूके हैं।

साहब—अच्छा अब, बाकायदा सलाम करो।

बच्चा—(फ़ौजी सलाम करना) यह लीजिये सलाम (खुद से) मगर यह सलाम किसका, यह कोई शान नहीं, यह कोई सम्मान नहीं, यह हमारा अपमान है और तुम्हारा मिथ्या अभिमान है, अगर चाहते हो कि तुम्हारी इज्जत करें तो पहले हमारे दिल की सल्तनत पर विजय पाओ, हमारे सर को नहीं बल्कि उपकार और मित्र भाव से हमारे आत्मा को झुकाओ।

वह राजा क्या जो तोपों से अधिकार किलों पर करता है।
है महाराजाऽधिराज वही जो राज दिलों पर करता है॥

साहब—जो ज्यादा कलाम करोगे तो बेंट लगाए जायेंगे।

बच्चा—तो जिस अमलदारी में निर्दोषों का खून बहाया जाता है, पशुवत रींग कर पेटके बल दौड़ाया जाता है, मीलों तक की कड़कती धूप में दौड़ाया जाता है, उस अमलदारी में

बेद लगाना कोई न्याय के खिलाफ़ नहीं। कारण कि इस वर्तमान काल में बेगुनाही भी माफ नहीं, मह्कूम से हाकिम का दिल साफ नहीं, कोई दाद फ़रियाद नहीं कोई इन्साफ़ नहीं।

यही तर्ज़ हुकूमत है तो फिर इन्साफ क्या होगा।
बे इन्साफी की रस्मों में न्याय का गला होगा॥
अगर निर्दोष परजा पर सितम ऐसा रवा होगा।
हुकूमत में अमन होगा न परजा का भला होगा॥

साहब—तुम दुनियां में ज़लील से ज़लील सज़ा के लायक हो।

बच्चा—हमारा दोष ?

साहब—कुछ नहीं।

बच्चा—हमारी ग़लती ?

साहब—कुछ नहीं।

बच्चा—हमारी तक़सीर ?

साहब—कुछ नहीं।

बच्चा—तो फिर।

साहब—बस थाने पर चलो।

बच्चा—चलिये, थाने पर ले चलिये, कोर्ट मार्शल में ले चलिये, अदालत में जाने से वह घबरायेगा जो कसूरवार होगा, सजा से वह डरेगा जो गुनहगार होगा, जो खालिस सोना है इसको आग में तपाये जाने का क्या डर है, जो शुद्ध आचरण वाला स्वामी है उसको कोतवाली या थाने का क्या डर है।

जिसका पापी है जो डरता है वह ही काल से।
जिसका खाता साफ है क्या डर उसे पड़तालसे॥

साहब—तो सजा भुगतनेके लिये तैयार हो जाओ।

बच्चा—हम सत्याग्रही हैं, इस लिये हर एक जुल्म सहने को तैयार हैं, हम सच्चाई के प्रेमी हैं, इस लिये सच्चाई की देवी पर बलिहारी हैं, आम मुजरिम कानून को कपट और छल से तोड़ता है, और फ़रेब से बचने के लिये सजा से मुंह मोड़ता है, परन्तु सत्याग्रही हमेशा राज के कानून के अनुसार चलता है, कारण कि कानून को वह जाति सुधार के लिये उचित समझता है, लेकिन जब वह किसी कानून को मनुष्यत्व से गिरा हुआ जानता है तो वह उस कानून को नहीं मानता है।

कूआं नदियों तालाबों में सुन्दर स्वच्छ जल लहराता है।
बिन स्वाति बूंद पपीहा पर आखिर प्यासा मर जाता है।
जो शुद्ध अमृत का भोगन है विष का फरहार नहीं करता।
जो है इन्सां वह पशुओं का बर्ताव स्वीकार नहीं करता॥

साहब—यह सब गंदे ख्याल सत्याग्रह की बुराई है।

बच्चा—बल्कि सत्याग्रह तो वह सिक्का है जिसके एक तरफ प्रेम और दूसरी तरफ सच्चाई है।

साहब—सत्याग्रह की आखिर पराजय होती है।

बच्चा—सत्याग्रही जानता ही नहीं कि शिकस्त क्या शय होती हैं, वह हमेशा सत्य के लिये युद्ध करता है और सत्य की सत्य की सदा जय होती है।

अगर कैद हो तो आजादी अगर मौत हो तो मुक्ति है।
यह दोनों सिद्ध मनोरथ करने वाली एक भक्ति है॥

साहब—यह जितना दङ्गा फिसाद है सत्याग्रह ही इस की बुनियाद है।

बच्चा—यह दलील बिलकुल भद्दी और बे बुनियाद है, सत्याग्रही के लिये अमन को तोड़ना तो कुजा किसी का मन

तोड़ना भी अधर्म है, उसको किसी का भय नहीं केवल सत्य को धर्म है सत्याग्रही या तो अपनी दलील के कोड़े से मुखालिफ़ को मनाता है, या अपने आत्मा का बलि देकर मुखालिफ के मन पर अपना असर बैठाता है।

जो है सत्याग्रही वह सत्य पर सरकार चलता है।
अहिंसा परमोधर्मः के नियम अनुसार चलता है॥
हम उसको बोटी बोटी काट डालो या जला डालो।
न बोलेगा कभी वह झूठ चाहे तुम मिटा डालो॥

साहब—कोड़े लगाकर तुम्हारे दिमाग़ की अभी मरम्मत की जायगी।

बच्चा—कोड़े लगाओ या पेटके बल चलाओ, लेकिन याद रखो जब अन्याय की घनघोर घटामें मत्तला साफ हो जायगा, और सूर्य भगवान अपनी किरणों के द्वारा स्वतन्त्र द्वीपों में भारत की सच्चाई का प्रकाश पहुंचायेगा और पवन देवता अपने झोंकों के वेग के साथ हमारे खून नाहक की सुगन्धि देश देशान्तरों में फैलायेगा, तो उस वक्त एक दुनियां इस अत्याचार की निन्दा करेगी, एक सृष्टि इस क्रूर कमसे तुम्हें शर्मिन्दा करेगी।

जुल्म का बादल समय पर जब कभी फट जायगा।
और धूआं अन्याय का आकाश से हट जायगा॥
तुम छिपाओगे मगर यह भेद सब खुल जायगा।
दाग़ यह ऐसा नहीं धोनेसे जो धुल जायगा॥

साहब—तो कोड़े खाने का इन्तजार करो।

बच्चा—हां मैं गर्दन झुकाता हूं तुम अपनी तलवार की धार तैयार करो।

तुमहारा जितना जी चाहे सितम मजलूम पर डालो !
कलेजा चीर डालो मेरी आंखों को निकलवा लो ॥
मेरी नस नस को छेदो और रग रग मेरी कटवालो ।
यह हाजिर है बदन मेरा इसी कोलहू में पिलवा लो ॥
मगर मैं देश सेवा का जो प्रण है वह न तोड़ूंगा ।
रहूंगा सत पै कायम यह छोड़ा है न छोड़ूंगा ॥
(ट्रांसफर्म)

थाने का दिखाना ! एक मसनूई शकंजे में बांधकर कई एक निर्दोषियों को बेद लगाए जा रहे हैं, चीखों की आवाज से आकाश में गूंज है और इधर उधर से शकंजा और कोड़ा लहु लोहान है ।

सीन ऐक्ट दूसरा चौथा

पर्दा महल !

(राक्षस रूप मार्शल ला का क्रोध में भरे हुए और हांपते हुए दाखल होना ।)

मार्शल ला-(जबानी) हैं कौन ? खूबसूरत जिन्दगी की नाव को नेस्ती के समुन्दर में डुबाने वाला, भुन्ने की तरह मनुष्य जीवन को मसल कर धूर में मिलाने वाला, अमन और

आसमान को अन्त तक पहुंचाने वाला, काल की विकराल गदा को शरमाने वाला, मित्र और शत्रु को एक ही पाषाण में बांधकर चलाने वाला, परमात्मा की सुन्दर सृष्टि पर अन्याय की आग बरसाने वाला, सतियों को बर्बाद, बच्चों को नाशाद और बूढ़ों को बे औलाद बनाने वाला तेजस्वी मार्शल ला।

खुश्की तर दोनों जला देता हूं अपनी आग से।
खून योधाओंका जम जाता है मेरी लाग से॥
मुझको पर्वा नम्रता और आहो ज़ारी की नहीं।
मुझको चिन्ता दर्द अन्द की बेकरारी की नहीं॥

(पुत्र की मृत्यु से दुखित माता का आना)

माता—(मार्शल ला का दामन पकड़ कर) यही है खूनी, चोर, डाकू, मेरे धनमाल लाल को लूटने वाला, जिसने मेरी बुढ़ापे की लाठी को तोड डाला।

जन्म की थी कमाई एक ही अनमोल हीरा था।
मेरा बेटा मेरी तारीक आंखों का ममौरा था॥
अय जालिम तोड़ कर तूने रखा है फल मेरा कच्चा।
बता मूजी कहां है वह मेरा प्यारा मेरा बच्चा॥

मार्शल ला—बुढ़िया, तू भूलती है।

अब मेरा क्या वास्ता अब तो अमन का दौर है।
हुक्म का बन्दा हूं मैं तो इसका कातिल और है॥

माता-नहीं देख देख, तेरे हाथ अभी तक बेगुनाहों के खून से लाल है खूनी डाकुओं की तरह तेरी भुजायें विक्राल है।

तेरी मुख की सूरत ही बतला रही हैं।
कलेजा यह तेरी निगाह खा रही है॥

तूही मेरे बच्चे का कातिल है ज़ालिम है।
लहू को मुझे तुझ से बू आ रही है॥

(सतीका अपनी पतिकी मृत्यु में दुखित दीवानी दाखिल होना)

सती—(मार्शल ला का दामन पकड़ कर) यही है, मेरे शीस के ताज को धरमें मिलाने वाला, मुझे जन्म भर के लिये सोग का मातमी लिबास पहनाने वाला मुझ नीदूल्ही को एक नामुराद विधवा बनाने वाला हत्याकारी यही है बता ज़ालिम बता :—

लूटा है जिसको तूने वह सम्पति कहां है।
ज़ालिम बता मेरा प्यारा पति कहां है॥
मर जाऊंगी मैं तुझ पर मेरा सबर पड़ेगा।
यक और खून नाहक सिर पर तेरे चढ़ेगा॥

मार्शल ला—अय औरत तू क्या दीवानी है ?

सती-हां दीवानी हूं, दुनियां में जीने की आशा छोड़ कर आई हूं, सुहाग की चूड़ियां फोड़ कर आई हूं, बता नहीं तो मैं अभी अपने सतपन का चमत्कार दिखाऊंगी, तेरी मनमानी डायरशाही को धर में मिलाऊंगी।

मैं न्याय के लिये धर्ती से मुरादों को जगाऊंगी।
मैं अपनी आहो ज़ारी से अभी परलै मचाऊंगी॥
मैं चीखों से अभी आकाश धर्ती पर गिराऊंगी।
मैं नालों से श्री भगवान का आसन हिलाऊंगा॥
मैं अपने दिलका दुखड़ा उनको रो रो कर सुनाऊंगी।

मार्शल ला-लेकिन उसके छीटें ज्वालामुखी के भयानक शोलों को नहीं बुझा सकते, रात दिन बहने वाले नदी नाले पत्थर की चटानों को पानी नहीं बना सकते।

तुम्हारी आंखका पानी असर कुछ कर नहीं सकता।
तुम्हारे रोने धोने से मैं हर्गिज डर नहीं सकता॥

माता—जालिम यह तेरा मिथ्या विचार है, सती का साप विश्व को पलमें नाश कर देने वाला हथियार है।

सती के आपमें रहते हैं साहस और बल वाले।
अभी चाहे तो पृथ्वी का सती तख्ता उलट डाले॥

सती—यदि सती नर्मदा ने अपनी शक्ति से सूर्य भगवान को उदय होनेसे रोक लिया था, यदि सती सावित्री ने काल को पतिके प्राण लेने से रोक दिया था तो मेरी फ़रियाद भी वृथा नहीं जायगी, आज नहीं तो समय पाकर फल लायेगी।

या हमेशा के लिये भारत से तू मिट जायगा।
या अमन भारत में दोबारा न होने पायगा॥

(भाई के शोग में बहन का बाल खोले हुए दाखल होना)

बहन—(मार्शल ला का गिरेवां पकड़ कर) यही है जिसने भारत की भावी सन्तान का अपमान किया, जिसने सुखसे बसते हुए लाखों घरानों को वीरान किया।

अभी तक खून नाहक से है दामन तर कसाई का।
यही जल्लाद मूजी है यह कातिल मेरे भाई का॥

माता—यही हत्याकारी दुखदाई है।

सती—यही जल्लाद है, अन्यायी है।

बहन—यही बे रहम कसाई है।

मार्शल ला—अरी नादान औरत मुझे छोड़ दो।

माता—तुझे छोड़ दें, जिसने भारत में हाहाकार मचा दिया, जिसने भारतवर्ष का गौरव और मान धूल में मिला दिया, उसे छोड़ दें।

बादशाहके सामने न्याय को हम ले जायेंगी।
हम तुझे इन अत्याचारों की सजा दिलवायेंगी॥
तूने मुर्दा कर दिया पर फ़िर भी बाकी प्राण हैं।
एक दुनियां देख लेगी भारती इन्सान हैं॥

मार्शल ला—(दिल में) किस तरह इनसे अपना पीछा छुड़ाऊं, अच्छा है कि अपनी बला किसी और के सर मढ़ूं (प्रकट) सुनो भाइयों, वास्तवमें मैं निर्दोष हूं।

माता—तुम और निर्दोष?

खुद जख्मी कभी अपनी दवा हो नहीं सकता।
इक खून का मुजरिम भी रिहा हो नहीं सकता॥
और तूने तो कितनोंके ही हैं खून बहाये।
मूरख है जो तुझ को अभी निर्दोष बताये॥

सती—दामन से तेरे दाग उतरने के नहीं हैं
जो घाव लगाये हैं वह भरने के नहीं हैं॥

मार्शल ला—तुम भूलती हो, इस सारे अनर्थ के तो डायर ओडवायर जिम्मावार है, वह दोनों ही तुम्हारे गुनहगार हैं, मैं तो केवल उनके हाथ का हथियार था, जिधर उन्होंने चलाया चलनेको मजबूर और लाचार था।

क्या हाथ की हर्कत ईन्सन की शक्ति अनुसार नहीं होती।
तलवार किसी को काटे तो मुजुम तलवार नहीं होती॥

माता—तो हम तेरे साथ उनको भी सजा दिलायेंगी, जिन्होंने निरपराधी भारतवासियों का गला कटवाया हम उनका गला कटवायेंगी।

(महात्मा गांधी का आना और मार्शल ला का आंख बचा कर भाग जाना)

गांधी—शान्त, बहनो, माताओं, शान्त।

फूलता हर फूल है और झूमता हर बात है।
आज सब कुछ है परन्तु कल कहां यह बात है॥
काल सबका तक रहा है सब के ऊपर घात है।
चार दिन की चांदनी है फिर अंधेरी रात है॥

माता—हे कर्मवीर, हे देश भक्त, हे जन हितकारी, जिस का कलेजा फट जाये, वह किस तरह शान्ति करे, जिसके लिये यकायक धरती पलट जाये वह किस तरह शान्ति करे। इस विधवा सती को देखो, इस दुखिया बहन की गतिको देखो।

जल रही विरहा अगन में यह अभागिन नार है।
पुष्प मुख है और उस पर आंसुओं की धार है॥

गांधी—माता अपना मुख मातृसेवा के अर्पण करो, दुख सुख का लेशमात्र भी ध्यान न करो।

है चञ्चल बड़ा जमाना यह अन्दाज बदलता रहता है।
हरबार नये सुर लेता है यह साज बदलता रहता है॥
यह पृथ्वी और आकाश हमें नित नये रङ्ग दिखलाते हैं।
इन दो पाटोंकी चक्की में रङ्क और रावो पिस जाते हैं॥

सती—हे वीर, मैं दुखिया लाचार विधवा अब किसकी शरण में रहूंगी?

गांधी—उसकी, जो संसार का दाता है, जिसके अटल भण्डारसे हर कोई खाता है जो किसी को भी द्वारसे निराश

नहीं लौटाता है, सबारी खाली झोली से जाता है और भर कर वापस लाता है।

जाओ जाकर मन लगाओ घर के काम और काज में।
ताकि हो हम को सुफलता हर तरह स्वराज में।

सती-गृहकार्य्यमें क्या मन लगेगा ?

क्या करूं हाथोंमें और पैरों में इक जञ्जीर है।
जिसके हलका में बन्धी गोया मेरी तकदीर है॥
प्राण प्यारे से मेरा मन छूट सकता हो नहीं।
यह पति पत्नीका रिश्ता टूट सकता ही नहीं॥

गांधी—सती, ईश्वर दुखोंका समूह एक साथ ही भेजता है, और उसमें भी हमारी भलाई देखता है, अच्छा अवसर है, पूर्वजन्म के सब कर्मों का फल अभी भोग लो।

यह फल कर्मोंका हर सूरतमें सबको मिलके रहता है।
वह ऐसा कौन है जो दुख नहीं करनी से सहता है॥
यह सारा विश्व ही जकड़ा हुआ है कर्म्म बन्धनमें।
कर्म्म से ही यह सम्पूर्ण कला का सृष्टि गृया है॥

(तिलक महाराज का कर कमल से आशीर्वाद देते हुए दाखल होना)।

दोहा—कर्म्म गति से है कोई दुखिया और कोई दीन।
सुख और दुख जानो सभी कर्मोंके आधीन॥

सती सब (प्रणाम करके) तिलक महाराज की जय।

वही लोकमान्य बालागङ्गाधर तिलक जी सदुपदेश रूपी गङ्गा की धारा है, जिसने देश भक्तिके अमृत स्रोत से भारत वासियों को तारा है।

वह भारत का तिलक प्यारा तिलक नामी तिलक धारी।
कि जिसके तनके तिल तिलका निकल कर तेल है जारी॥
मुसीबत पर मुसीबत मातके कारण है लाचारी।
नहीं इक पग तिलक मर का यह है तूफान गो भारी॥
तुझे है धन्य अय केवट किनारे तू लगायेगा।
हमारी डूबती नैय्या को तू ही अब बचायेगा॥

तिलक—हे सती, ईश्वर इच्छा को प्रबल मानो, कौन मरा? भगवान कृष्णका गीता उपदेश पढ़ो और दिल को शान्ति दो।

यह अमर है आत्मा मारे से मर सकता नहीं।
नाश इसका अस्त्र या हथियार कर सकता नहीं॥
आग से जलता नहीं और जल डुबो सकता नहीं।
देह बदलता है मगर यह नाश हो सकता नहीं॥

माता-हे गुरु देव! तुम्हारे अमृत रूपी उपदेश से मुझे पुत्र वियोग का दुख भूल गया।

मेरे हृदयमें यह जिसके लाख लाख एहसान हैं।
ऐसे भारत पर तो जितने पुत्र हों कुर्बान हैं॥

तिलक-हे बहनो! अब मैं आखरी अवस्था में हूं, न जाने तुमसे मेरी यह अन्तिम भेंट हो। यदि तुमको मेरे साथ कुछ स्नेह है तो इसे ग्रहण करो मेरा उपदेश यह है।

आदर्श मान निर्मल जीवन पवित्र जो है।
भारत निवासियों का बेगर्ज मित्र जो है॥
सन्यास गृहस्थ दोनों का एक चित्र जो है।
है धीर वीर गांधी चरणों में उस के आओ।
जो चाहते विजय हो सेना पति बनाओ॥

गांधी--हे पवित्र पूजनीय देवियों ! मैं अपने मान्यवर धर्म पिताका प्रसाद ग्रहण करता हूं, अब तुम भी अपने पतियों और भाइयों का मरण शोक भूल जाओ देश सेवामें अपने प्राण निछावर करने वाले, अचल पदवी का प्राप्त करने वाले सच्चे वीरों की मृत्यु पर आंसू न बहाओ।

पहुंचते हैं वह भगत परम पिता के पास।
इन योधाओं का हुआ देखो स्वर्ग निवास॥

(सीन का ट्रांसफर होना)

(जल्यां वाले बाग के शहीदों का स्वर्गवास दिखाई देना)

——o——
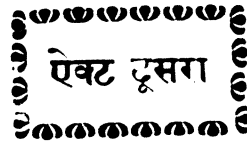
सीन ऐक्ट दूसरा पांचवां

मकान।

(दो फौजी आदमियों का मुसज्ञा दिखाई देना)

पहला—क्यों दोस्त आज तो पौ बारह है ना ?

दूसरा—वह किस तरह ?

पहला—दिल के अरमान निकालने के लिये आज सुनहरी मौका हाथ आया है, डाका, चोरी, रहज़नी, जब्र हर एक काम कर गुजारनेके लिये आज किस्मत ने हमें यह दिन दिखाया है, आज इस सृष्टिका बेहतरीन इन्तज़ाम करने वाली महान शक्ति की आंखें बन्द हैं, कान बहरे हैं, जबान गूंगी है, सरकारी नौकरी में ऐसे अवसर अक्सर आते हैं लेकिन समझदार ही इस से लाभ उठाते हैं।

हाकिम आला नहीं और न्याय को शाला नहीं।
जो भी कर गुजरेंगी कोई पूछने वाला नहीं॥

दूसरा—तो क्या करें ?

पहला—किस पर हाथ साफ करें ?

दूसरा-निर्दोष प्रजा पर हाथ साफ करना क्या पाप नहीं ?

पहला—वाह !

पाप करना पाप हो तो पाप को हस्ती न हो।
जोश हृदय में न हो स्वभाव में मस्ती न हो॥
लूटना गर है मजा इस पापके सामान का।
ध्यान रखना है वृथा फिर मान और अभिमान का॥

दूसरा कसूरावर—पर अनर्थ हो जाए, तो यह निस्सन्देह है न्याय, लेकिन :—

पहला—लेकिन यहां पर एक और सवाल है, न्याय और अन्याय का फजूल ख्याल है, आज एक एक अङ्गरेज के खून का बदला हिन्दोस्तानी बच्चों और औरतों की हत्या से चुकाया जायेगा। जहां सफेद खून का एक कतरा गिरा है वहां हजारों काले आदमियोंका खून गिराया जायेगा।

टकोंका कौनसा अपने लिये दुष्टों ने छोड़ा है।
इन्हें जितना भी हम रुस्वा करें उतना ही थोड़ा है॥
हम ही ने इन को पाला है हमें पामाल करते हैं।
हम ही से सीख कर चालें यह हमसे चाल करते हैं।

दूसरा-लेकिन यह देखना है कि पापका क्या परिणाम है ?

पहला—क्या परिणाम है ?

दूसरा बुरा अञ्जाम है।

हमेशा पाप दम भर के लिये ऊपर उछलता है।

यह सिक्का पापका दो चार दिन दुनियामें चलता है।
हुआ क्या कुछ दिनों अन्याय की गर अमलदारी है।
मगर देखोगे आखिर धर्मका पल्ला ही भारी है॥

पहला—यह तुम्हारी भूल है, पापका विचार फ़ज़ूल है, पाप और महापाप में सिर्फ एक सीढ़ी का फर्क है, पाप की दुनिया में रहना चाहो तो नियमों के अनुसार चलना होगा, एक जगह खड़े न रह सकोगे, ऊपर उठोगे, या नीचे को गिरोगे, उठना चाहोगे तो अपनी ताकत से भारी बोझों को ठेल कर उठना होगा, नीचे गिरना चाहोगे तो अपने बोझ से ही नीचे उतरते जाओगे।

दूसरा—परन्तु इस मौका पर अगर हम कोई अनुचित काम कर बैठेंगे, तो आयन्दा लिखी जाने वाली तवारीख दुनियां पर हमारे चाल चलन का एक अपवित्र चरित्र रोशन करेगी।

यह काम क्या न समझेगी नारवा हमारा।
नफरत से नाम लेगी दुनियां न क्या हमारा॥

पहला—दुनियां कुछ नहीं, दुनियां हमारी युक्ति के बल्ले के सामने एक गेंद के समान है, हम जिस तरफ चलायेंगे उसे चलना पड़ेगा, हम दुनियां को जिस तरफ झुकायेंगे उसे झुकना पड़ेगा।

दूसरा—तो अब क्या करना चाहिये?

पहला—मौका, वक्त और आजादी से लाभ उठायें, इस मकान की औरतों से छेड़खानी कर के जी बहलायें। आज फौजी ताकत का राज है और एक पन्थ दो काज है, हमारा दिल भी बहलेगा और अफसर भी खुश होगा।

दूसरा—आप का ऐसा विचार है तो बन्दा भी इस नेक काम में साथ देनेको तैय्यार है।

पहला-(दरवाजा खटखटा कर) दरवाजा खोलो।

(मकान की छत पर डरके मारे सहमें हुई दो औरतों का जाहिर होना)

पहली औरत—(आवाज सुन कर) बहन मालूम होता है कि अब मार्शल ला ने और भी अधिक भयङ्कर रूप धारा है, जो जातिका महत्व कुचलनेके लिये भारत महिलाओं के निवास स्थान में अपना पांव पसारा है।

दूसरी औरत :—

बस तो समझो विश्व से अब शर्म सारी उठ गई।
और अमन आमान की मर्याद सारी उठ गई॥
बाड़ की बदली है नियत खेत को खाने लगी।
अब वह रक्षा और रस्म पासदारी उठ गई॥

पहली औरत-तो फिर?

पहला-जल्दी दरवाजा खोलो।

दूसरी औरत—तो अब क्या करना होगा?

पहली औरत—अब कायरों को भूल कर शेरनीका स्वांग भरना होगा, रोपनेको भूल कर मर्दानी ताकत से अत्याचारका सामना करना होगा।

हम कहनेको तो औरत हैं निर्बल हैं और अबला हैं हम।
जब लाज पै हाथ कोई टूटे तो अबला नहीं बला हैं हम।
देखेंगे अत्याचारी भी क्या तेज प्रचण्ड सती का है।
भारत महिला के हृदयमें क्या तेज प्रबल शक्ति का है॥

दूसरी औरत—मगर हमारे सतीत्व पर अत्याचार का हाथ टूटेगा ?

पहली औरत—तो इससे प्रथम कि किसी गैर का अपावन हाथ इस शुद्ध शरीर को स्पर्श करे, यह शरीर अपनी ही उत्पन्न की हुई निराम की अग्नि में जल कर भस्म हो जायगा। प्राण जायेंगी लेकिन असमत पर दाग नहीं आने पायेगा।

अपने सतपन पर न हरगिज आंच आने पायेगी।
जान जायेगी मगर इज्जत न जाने पायेगी॥

पहला मर्द—दर्वाजा खोलो, नहीं तो हमें दर्वाजा तोड़ कर जबर्दस्ती से काम लेना पड़ेगा।

पहली औरत—हम आज्ञा मानने को तैयार हैं मगर पर्दादार हैं।

पहला मर्द—कुछ पर्वा नहीं।

अकसीर आज गिर कर मट्टी में खाक होगा।
असमतका अब तुम्हारी किस्साही पाक होगा।
असमत का रत्न जिस पर्दे में है तुम्हारे।
पर्दा वही हमारे हाथों से चाक होगा॥

पहली—ऐसा करनेका तुम्हें क्या अख्त्यार है ?

पहला-हमारा जाती रुतबा हमारे कामका जिम्मावार है।

पहली औरत—रुतबे का अभिमान करना बेकार है।

जोश में रुतबे के आकर तू न सतियोंको सता।
किसका रुतबा रह गया और किसका रहता है सदा॥
कालके चक्कर में यह रुतबा तेरा कट जायगा।
यह गुबारा है हवा निकलेगी तो फट जायगा॥

पहला मर्द—तुम जानती हो कि तुम हमारे गुलामी

को भी गुलाम हो हम तुम्हारे अन्न दाता और जर दाता है, तुम हर तरह से हमारे दाम में हो।

पहली औरत—क्या तुम्हें जरा मालका घमण्ड है ?

पहला मर्द—और हमारा यह घमण्ड २ है ?

पहली औरत—अय दौलत पर घमण्ड करनेवाला, इसपर न इतराओ, अपने परलोक को संभालो।

पास रावण के भी थी इक दिन जो लङ्का स्वर्ण की।
क्या तुम्हे उसकी तरह चिन्ता नहीं है मरण की।
इस पे गर इतराओगे तो अन्तको पछताओगे।
कौन इसको ले गया जो तुम इसे ले जाओगे॥

दूसरा मर्द—अगर तुम अपने हाथ से अपने मुंह से पर्दा नहीं उतारोगी, तो फिर हमें बाहुबल से काम लेना पड़ेगा।

पहली औरत—अरे मूर्ख, बाहुओं के बल पर घमण्ड न कर।

है वृथा मूरख तुझे इन बाहों के बल का गुमान।
तुझसे क्या कम था अरे बाली भी था बलका निधान॥
क्या रहा उसका जो अब तेरा अमल रह जायगा।
काल के आगे तेरा सब बाहु बल रह जायगा॥

पहला मर्द—मगर हम काल से नहीं डरते।

पहली औरत—तो ईश्वर से डरो, उस सर्व शक्तिमान से डरो, उस भक्त भय भञ्जन, दुष्ट निकन्दन से डरो।

डरो उस से कि वह सृष्टि का शक्तिमान ईश्वर है।
वह जितना दिल का कोमल है उतना ही भयङ्कर है॥
अनाथों को सताने का तरीका क्यों निकाला है।
पता है निर्दयी तुझ को कि कल क्या होने वाला है।

दूसरा मर्द—शायद तुम सरकारी आदमी की ताकत और शान से वाकिफ़ नहीं ?

पहली औरत—और तू शायद दोनों के पालक उस सर्वशक्तिमान से वाकिफ नहीं ?

दूसरा मर्द—उसका वहम एक मिथ्याचार है।

पहली औरत—तेरे ओहदे और अत्याचारका भी बालू की कमजोर दीवार पर आधार है।

चालें तेरी यह तिर्छी टेढ़ी कहां रहेंगी।
कब तक तुझे इस ओहदे की शेखियां रहेंगी॥
ओहदा नहीं रहेगा रुतबा नहीं रहेगा।
रहने को कुछ रहेगा तो बस नेकियां रहेंगी॥

पहला मर्द—क्या तुम नहीं मानोगी ?

क्या हाथ को बढ़ाऊं और बे नकाब करदूं।
मर्जी है क्या तुम्हारी अस्मत खराब करदूं॥

पहली औरत-लेकिन याद रखो.औरत पर अत्याचार करना कोई बच्चोंका खेल नहीं जब कभी औरत पर इस तरह अत्याचार हुआ है, जब कभी भूमिपर ऐसे अधर्म का प्रचार हुआ है, तब ही कोई न कोई विघ्न हुआ है और दुनियां में परिवर्तन हुआ है।

सीता पर जुल्म हुआ था जब उसका परिणाम बुरा ही था।
द्रोपदी पञ्चाली पर जब जुल्म हुआ उसका अञ्जाम बुराही था॥

पहला मर्द-हम ऐसी मिथ्या कहानियों पर विश्वास नहीं करते।

पहली औरत-तो याद रखो; यदि कलियुग में भगवान प्रत्यक्ष रूप से हमारी सहायता को न आयेगा तो दर पर्दा

तुम जैसों को अपना चमत्कार दिखलायेगा। देखो, देखो जिस अङ्गरेज जाति पर हम लोगोंको पूरा विश्वास है, तुम्हें उसी को बदनाम करनेके लिये पाप मार्ग की तलाश है। बादशाह वक्त का कानून, बादशाह वक्त का अख्त्यार तुम्हें हर्गिज यह आज्ञा नहीं देता कि तुम उस को निर्बल प्रजा को इस तरह सताओ, मन माना डङ्का बजाओ, उसके यश और कीर्ति का विचार भूल जाओ।

दूसरा मर्द-हमें इस भद्दा दलील को जरा भी पर्वा नहीं।

"जिसकी लाठी भैंस उसकी यह मसल मशहूर है।
हाथ अब पर्दे पे उठने के लिये मजबूर है॥

(दूसरी औरत का चेहरे से नकाब उतार कर बेपर्दा कर देना)

पहली औरत-हे भगवन्, हे यदुनन्दन, तुमने ही रावण के पंजे में फंसी हुई गौ सरूपिणी जानकी माता की रक्षा की थी, तूने ही उस सती का धर्म बचाया था, तूने ही दुष्ट दुशासन के नापाक इरादों को कुचल कर सती द्रौपदी का चीर बढ़ाया था, तूने ही सुदामा को गरीबी की जंजीरों से छुड़ाया था, तूने ही गज को ग्राहके मुंह से बचाया था, तुम सदा ही अबला स्त्रियों के सहाई हो, तुम ही दीन दुखियाके पालन हार हो, तुम ही निराधारों के आधार हो।

आके देखो किस क़द्र जोरो जफा होने लगा।
किस तरह बदला वफाओं का अदा होने लगा॥
अब भलाई के एवज़ हमसे बुरा होने लगा।
जुल्म अबला नारियों पर भी रवा होने लगा॥

दूसरी औरत-हे मेरे घनश्याम अब तो पापका घन छा गया।
आओ अब अवतार धारो घोर कलयुग आगया॥

पहली औरत-देखो धर्म्म का अमल उठ रहा है, आज यह काम अन्ध सेवक अपने शरीफ दिल शाहंशाह जार्ज पंजम जैसे प्रजा हितकारी स्वामी की आज्ञा उलङ्घन कर रहे हैं। जिस स्वामी का आज तक निमक खाया उसी की कीर्ति का अनादर कर रहे हैं, अपने राजा की प्यारी प्रजा की सती महिलाओं के धर्म को स्वार्थ की ठोकरोंसे पामाल करने की ठानी है। आज जिधर देखो हे प्रभु उधर ही आर्य्य सेवित भारतवर्ष की हानि है।

गर अब नहीं आओगे तो कब आओगे प्यारे।
जब नाम ही मिट जायगा तब आओगे प्यारे॥

(दोनों औरतों का गाना)

वक्त है यही मेरे बांसुरी वाले आजा।
अब तो बिगड़ी हुई भारत की बनाले आजा॥
माल की फिक्र थी पहले तो बडी भारत को।
अब तो लेकिन हैं पड़े जानके लाले आजा॥
द्रौपदी की थी रखी लाज सभा में तूने।
आज भारत की बस्ती को बचा ले आजा॥
हाथ इमदाद का सुग्रीव को देने वाले।
हाथ भारत के दुखी जन का बटा ले आजा॥
दर्दो इफ़लास सुदामां का बटाने वाले।
इस दुखी देश का भी दर्द मिटाले आजा॥
देख कोई न कहे इनका कोई राम नहीं।
सूर्य्य की बंश के सूरज के उजाले आजा॥

हर तरफ फैली हुई आग है बे चैनी की।
गीता उपदेश के छींटों से बुझाले आजा॥
(सीन का ट्रांसफर होना)
(क्षीर सागर का दिखाव, विष्णु भगवान लक्ष्मी के जंघा स्थल से सर उठा कर भारत भूमिको तसल्ली दे रहे हैं)।

सीन | एक तीसरा | तीसरा

राष्ट्रीय मिलाप-भुवन।

(लीडरों को राष्ट्रीय दुनियां से निकलती हुई आवाज का सुनाई देना)

गाना।

इस आजादीकी खातिर अपना तन मन धन लगा देंगे।
हम अपने प्यारे भारत को स्वतन्त्र फिर बना देंगे॥
अभी तो की है कुर्बानी सिर्फ माल और दौलत की।
जरूरत जब पड़ेगी तो यह जानें तक लड़ा देंगे॥
गुलामी की यह जंजीरें जिन्होंने देश को जकड़ा।
हम उनको तोड़ना तो क्या है टुकड़े तक उड़ा देंगे॥
यह आजादी का संदेशा दिया जो आत्मा ने है।
इसे भारत के घर घर में पहुंच कर हम सुना देंगे॥
जन्म से हक है जो अपना है जिससे कौम का जीवन।
हम अपने प्यारे भाइयों को वही न्यामत दिला देंगे॥

अगर सच्चे स्वदेशी हैं रखेंगे देश की लज्जा।
विदेशों में हम अपने देश का डङ्का बजा देंगे॥
"न मिल वर्तन' से हम को एक दिन स्वराज्य लेना है।
चमत्कार आत्मिक शक्ति का हम सब को दिखा देंगे॥

[शेर पञ्जाब लाजपतराय का प्रवेश]

लाजपतराय--आओ मेरे प्यारे मित्रों आओ! अन्धेरे से निकल कर उस रोशनी में आओ, जहां से स्वाधीनता का सुन्दर स्वरूप अपने पूरे प्रकाश के साथ चमकता हुआ नज़र आ रहा है। आओ इस गुलामी के कारागृह से निकल कर उस खुली हवा में आओ जहां आजादी का शीतल झोंका तुम्हारे आत्मा को अपनी कुदरती खुराक बहम पहुंचायेगा। आओ जिस सच्ची खुशी की तरसते हुए तुम्हारे बाप दादा परलोक को सिधारे हैं, उसका खूबसूरत चेहरा यहीं से नज़र आयेगा। जो आन बान तुम्हें चमकदार दिखाई देती है, वह गुलामी की सुनहरी जञ्जीर है, जिसमें बंधा हुआ तुम्हारा स्वतन्त्र आत्मा संसार की सच्ची राहत से महरूम होकर भटक रहा है। जो नुमायिश तुम्हें सुख देने वाली प्रतीत होती है, वह गुलामी की झूल है, जिसके नापाक बोझ से दबी हुई तुम्हारी हस्ती तुम्हें नाचीज और गुलाम बना रही है। इस झूल को फेंक दो उस गुलामी की जञ्जीर को तोड़ दो। वह रास्ता छोड़ दो और उस रास्ता पर आओ जो सीधा और साफ़ है।

अगर लेना है आजादी बढ़ो आगे इधर आओ।
तुम आजादीके लायक हो तो लायक बनके दिखलाओ॥

गुलामी का यह जूआ अपने सरसे फेंक डालो तुम।
खड़े होकर तुम अपने पाओं पर अपना बनालो तुम॥

हां मगर जाने रहो, इस स्वाधीनता के मार्ग में हिंस डाकू मिलेंगे, त्याग से उन का मुकाबला करो। स्वार्थ के खूंखवार पशु मिलेंगे, आत्मिक बल के शस्त्र से उन को नीचा दिखाओ। मुसीबत के ओले बर्सें तो दृढ़ता के ढाल से उनका निवारण करो। दुखों की आंधी चले तो साबित कदमों से कर्त्तव्य की चट्टान पर अपने पैर जमा लो। आओ प्यारे अपने लीडरों की तरह देश की खातिर अपना सर्वस्व बलिदान करो। कौमी आन के लिये अपनी सब से ज्यादा अज़ीज वस्तु प्रदान करो। प्यारे देश ही हमारा सर्वस्व है।

देश की चिन्ता और स्वदेश का ही ख्याल है।
इस पे कुर्बा जान है इस पर निछावर माल है॥
गर वतन को अपना इक २ राम भी दरकार है।
मर्द है वह ही जो देने के लिये तैय्यार है॥

[शदाय वतन हकीम अजमलखां का प्रवेश]

हकीम अजमल खां—शाबाश बराई हिम्मते मर्दाना तू, अय शेर पञ्जाब, पञ्जाब तो क्या इस वक्त सारा भारतवर्ष तुझ पर नाज़ कर रहा है। इस वक्त तेरी हिम्मत का शह बाज़ अपनी पूरी ताकत के साथ कुर्बानी के अश्मान पर पर्वाज कर रहा है। सच्ची कुर्बानी की शमां को रोशन करके तूने भारत पुत्रों को आज़ादी का मार्ग दिखलाया है। तूने अपने पंजाबी भाइयों को स्वाधीनताके पवित्र जल प्रवाहसे शुद्ध अमृत का पान करवाया है। धन्य है वह कर्त्ता जिसने तेरे पाक

वजूद का हस्ती का जामा पहनाया है। धन्य है वह माता जिसने तुझे अपने उदर से दाया है।

> खूब जीना है तुम्हारा खूब दुनियां में जिये।
> अपने रहने के मकां तक कौम की खातिर दिये॥
> पूर्वजों के नाम का तूने है रोशन कर दिया।
> दाग़ खाए दिल पर और भारत को गुलशन कर दिया॥

लाजपतराय—अय भारत के सच्चे सपूत, वह तू ही है, जिसने मान ईमान दौलत और शान, बङ्गले और मकान, इज्जत के तमाम निशान, सब कुछ कौम की जरूरत पर निसार कर दिया। बड़ी बड़ी उपाधियों और सरकार के मिथ्या वरदान का बलिदान कर दिया। आज इस्लाम को तुझ पर अभिमान है आज भारतवर्ष पर तेरा ऐहसान है।

> काम वह करके दिखाया तूने हिन्दोस्तान में।
> हो गया चर्चा तेरा तर्की में और ईरान में॥
> कौमी और इज्जत पर किया तूने बलि आराम का।
> क्यों न हम प्यारे कहें होरा तुझे इस्लाम का॥

हकीम अजमलखां—कौमो के जरूरत के सामने यह खताब और रुतबा क्या चीज है, अगर वक्त आयेगा तो अपने मादरे वतन का यह फर्माबरदार बेटा अपनी जान नज़र करने से भी कद - पोछे न हटायेगा।

> जो भी है यां पर हमारा है वतन के वास्ते।
> मालो जर असबाब सारा है वतन के वास्ते॥
> इससे बढ़कर जो कि प्यारी है हमें वह जान है।
> सबसे प्यारी है मगर यह जान भी कुर्बान है॥

[फ़ख्रे कौम पं मोतीलाल नहरू का प्रवेश]

मोतीलाल—मेहदी का पत्ता पिस कर रङ्ग लाता है। एक कम कीमत स्याह पत्थर का टुकड़ा सिल पर घिस कर आंख का सुरमा बन जाता है। दीपक खुद जल कर दूसरों को रौशनी पहुंचाता है। दाना खुद खाक में मिल कर औरों के लिये गुल खिलाता है।

है वह मुर्दा जो रहा जो अपने तन के वास्ते।
वह ही जीता है जो जीता है वतन के वास्ते॥
देश के हित जिसने दुख सुख सब गंवारा कर लिया।
लोक और परलोक का अपने सुधारा कर लिया॥

लाजपतराय आओ वतन के प्यारे लाल तुमने अपने नामका सच्चा परिचय दिया है, तुम बेशक भारत माता के मान मुकुट में चमकाने वाले अमूल्य मोती हो। तुम भारत माता के आज्ञाकारी लाल और अन्धकार मय वर्तमान काल को ज्योति हो। हजारों रुपया की आमदनी पर लात मार कर अमीराना सुख और आराम को बिसार कर, आत्मा की गर्दन से स्वार्थका जूआ उतार कर मातृ सेवा के सच्चे भावों को हृदय में धार कर, कर्त्तव्य की रण भूमि में आने वाले वीर तुम हो हो। क्रोध मोह लोभ अहंकार इन पांच शत्रुओं को पछाड़ कर, खुद गर्जी के परों से लिताड़ कर कर्मभूमिमें जौहर दिखाने वाले रण धीर तुम ही हो।

तुम से भारत की जाति का क्यों कर यश दूना न हो।
तुम देश भक्त और त्यागी हो और सतका एक नमूना हो॥
तुमने सब को दिखलाया है यूं देश भक्ति का दम भरते हैं।

इस तरह वतन पर देश भक्त सर्वस्व निछावर करते हैं॥

मोतीलाल—मैंने कुछ नहीं किया, जिस भारत माता ने हमारे खाने को नाना प्रकार के भोजनोंका भंडार दिया, जिस भारत माता ने हमारे पूर्वजों का आत्मिक ज्ञान प्रदान करके भवसिन्धुसे तार दिया, जिस भारत माता ने हमारे एक एक रोम पर लाख लाख उपकार किये, जिस भारत माता ने हमारी आत्मिक प्यास बुझाने के लिये अपने सर्व लोक पूजनीय धर्म शास्त्रों द्वारा धर्मोपदेश रूपी अमृत बरसाया, जिसने आज तक हमको खिलाया और पिलाया, तो भारत माता अब वृद्ध अवस्था में भी हमारे बुढ़ापे की लाठी बन कर हमें चलायेगी और जो मृत्यु के पश्चात् अपनी आनन्द स्वरूपिणी गोदी में हमें सुलायेगी, उस की खातिर हजारों रुपयों की आमदनी तो क्या चीज है, संसार में सबसे ज्यादा अज़ीज़ है वह भी तैयार है।

दरकार बाल की हो तो मैं बाल बाल दूं।
चमड़ी हो काम की तो मैं अपनी यह खाल दूं॥
आंखें यह काम आयें तो आंखें निकाल दूं।
दरकार हो जिगर की तो चरणों में डाल दूं॥
माता जो मेरे वास्ते ऐसी उदार है।
उसको तो एक आन पै सब कुछ निसार है॥

गाना।

अगर भारतके काम आये तो मेरी जान हाजिर है।
मेरे जीवन के सुख दुख का सब ही सामान हाजिर है॥
यँही यह जान एक दिन तो जहां से जाने वाली है।

अगर इसके लिये जाये तो फिर यह भाग्य शाली है ॥
है भारत एक देवी और मैं इसका पुजारी हूँ।
यह माता है मेरी बेटा मैं इसका आज्ञाकारी हूँ॥
मैं इसका धर्म बालक हूं यह है धर्म्म आत्मा मेरी।
मैं इस की आत्मा हूं और यह परमात्मा मेरी॥

हकीम अजमलखां तो आज यही भारत माता जो निरादर और अपमान के कोड़े खा रही है, जिस के मान की नाव दुख के भवर में फंसी हुई डगमगा रही है, क्या हम उसको अपने जीते जी दुख के सागर में बे सहारा छोड़ देंगे, क्या इन आंखों से देख कर जहर खाया जायगा।

(मुहिबे वतन सी० आर० दासका प्रवेश)

सी० आर० दास--नहीं कभी नहीं, यह आंखें भारत का अपमान होता न देख सकेंगी। यह कान भारत की बुराई सुनने को हर्गिज तैयार नहीं होंगे, बल्कि हम आंखों को भारत के गम में रो रो कर घुला देंगे, इस की खातिर सख्तियां उठाने के लिये हम अपने दिल को पत्थर का बना लेंगे। जर दिया माल दिया दौलत दी इक बाल दिया, अब जो कुछ बाकी है वह भी इसी भारत माता की खातिर लगा देंगे।

हम भारत का हित करने को यह सीना सपर बनायेंगे।
हम भारत माता की खातिर अपना सर्वस्व लगायेंगे॥
हम दुख और दर्द जमाने के इसकी खातिर सह जायेंगे।
सिर पर आरे भी चलते हों तो भी इस के गुण गायेंगे॥

(देशभक्त पंडित रामभज दत्त का प्रवेश)

पण्डित रामभज दत्त—और उस वक्त तक गुण गायेंगे, जब तक कि मुंह में जबान है और शरीर में प्राण है। महात्मा गांधी के सत्य उपदेश अथवा असहयोग पर चलते हुए जबान से सत्य का प्रचार करेंगे। जबान बन्द कर दी जायेगी तो कलम को इख्त्यार करेंगे। कलम पकड़ लिया जायेगा तो शुभ भाव से, सच्चे हृदय से, दृढ़ विश्वास से, प्रार्थनाओं द्वारा भारत का भला चाहेंगे, पञ्जाब के अत्याचारों की तलाफी करायेंगे और खिलाफत सम्बन्धी गलतियों का संशोधन हो जाने पर चैन पायेंगे।

हम अहिंसा परमो धर्मः की सत्ता बतलायेंगे।
धर्म पर चलते हुए हम धर्म का यश पायेंगे॥
बाहु बल से और कौमों ने लिया स्वराज है।
आत्मिक बल से मगर स्वराज हम ले जायेंगे॥

मोतीलाल—क्यों नहीं जब देश भक्त सी० आर० दास जैसे त्यागी और आप जैसे भारत अनुरागी देश कल्याण में डट जायेंगे तो हमारी आजादी को रोकने वाले और हमारी शुभ कामनाओं का विरोध करने वाले समस्त साधन मार्ग से हट जायेंगे, कामयाबी हाथ बांधे हुए सेवा में हाजिर हो जायेगी, स्वाधीनता हमारी उन्नति के मार्ग सफा करने में तत्पर हो जायेगी।

घिसने से कसौटी पै ही सोने को जिला है।
यश जिसको मिला उसको ही सेवा से मिला है॥
भाइयों की बुराई से बुराई है हमारी।
गर सबका भला है तो हमारा भी भला है॥

लाजपतराय—

बस न अब पेशे नजर ध्यान पेसो पेश का हो
है वही काम भला जिस में भला देश का हो ॥

(भारत सेवक पंजाब वीर डाक्टर किचलू का प्रवेश)

तो हम अपने देशका सुधार करने के लिये और जाति का उद्धार करने के लिये समुन्दर के किनारे पर चट्टान की तरह दृढ़ता से कायम हैं। मुसीबत के थपेड़े हमारे पावों को नहीं उखाड़ सकते। त्रास के गर्म झोंके हमारी शुभ कामनाओं के बाग़ को नहीं उजाड़ सकते। अब तो हम उठे हैं, तो पहाड़ी किले की मीनार के मानिन्द जरूर ही ऊपर को सर उठायेंगे, अब तक़दीर के तीर हमारे पाओं तले की खाक को चूमने के लिये कामयाबी की कमान से निकल कर आयेंगे।

मुसीबत का तूफ़ान चाहे बया हो
हो दुश्मन ज़माना मुखालिफ़ हुआ हो ॥
हो क्या फ़िक्र गर शीस भी यह कटेगा।
न पीछे को हिम्मत का पांव हटेगा ॥

(मुहिब्बे वतन सत्यपालका प्रवेश

सत्यपाल—और जैसे सहरा में ऊंठ भूक प्यास गर्मी और सफ़र की मुसीबत झेलता है और निर्बल होकर गिर नहीं पड़ता, उसी तरह हम भी तमाम खतरों और मुसीबतों में अपने दिल को ढारस देंगे, तकदीर के क्रोध को ध्यान में

नहीं लायेंगे। जिस मार्ग में पैर जमा दिये हैं, उस मार्गसे पीछे हटकर नहीं जायेंगे।

दिल है पहलु में तो है देशको उल्फत दिलमें।
जान हाथों पै लिये फिरते हैं हसरत दिल में॥

जगद्गुरु स्वामी शङ्कराचार्य का प्रवेश

धन्य है वह महापुरुष जिनका धन अपने ब्रह्मपुरवासी भाइयों के काम आता है। धन्य है वह देवता स्वरूप नेता जो अपने मज़लूम भाइयों की रक्षा करते हैं, जो बलवान निर्बल पर जुल्म करने से बाज रखते हैं, जो अनाथों की खोज लगाते और उनकी सच्ची जरूरियत का प्रबन्ध करते हैं, और जो अपने दस्तरख्वान की बची हुई चीजों को अपने नादार भाइयों के योग्य समझते हैं।

दोहा—धन्य धन्य वह आत्मा, धन्य उसी के भाग।
जिसके हृदयमें बसा, सच्चा देश अनुराग॥

लाजपतराय—और अफ़सोस है उन पर जो दौलत पर दौलत जमा करते और उस पर इतराते हैं, जो गरीबों का गला घोट कर और अनाथों का पेट काट कर द्रव्य का अम्बार लगाते हैं। धिक्कार है उनको जो गरीबों के खून और पसीने को खातिर में नहीं लाते और बेदर्दी से उन पर अनर्थ करके मौज उड़ाते हैं। लानत है उन पर जो यतीमों के आंसुओं को दूधकी तरह पी जाते हैं, जिनके कान विधवाओं की गिरयाजारी सुन कर बन्द हो जाते हैं।

शङ्कराचार्य—वही लोग लोक को बिगाड़ कर परलोक के आत्मिक अधिकार से जाते हैं।

जो अपनी रोटी के खातिर भाइयों का पेट जलाते हैं।
जो अपनी प्यास बुझाने को भाइयों का खून बहाते हैं॥
जो अपने स्वार्थ की खातिर भाइयों का नाम मिटाते हैं।
जो खुद गर्जी की वेदी पर भाइयों को भेंट चढ़ाते हैं॥
वह एक बार तो जीते जी यहां अगन चिता में पड़ते हैं।
फिर घोर नर्क में पड़ते हैं सड़ जाने पर भी सड़ते हैं॥

सब—जगद्गुरु शङ्कराचार्य्य की जय।

लाजपतराय—आप जैसे जगद्गुरु इस कर्तव्य समर में पुरुषार्थ के सस्त्र बांध कर उतर आयेंगे, तो निश्चय ही भारतीय कौम की जय होगी।

देश के उद्धार में साधु भी जब लग जायेंगे।
फिर नसीब अपने भारतवर्ष के जग जायेंगे॥
देश भक्ति में पड़ेंगे भक्त जब भगवान के।
दिन फिरेंगे क्यों न फिर इक बार हिन्दुस्तान के॥

(आवाज़ भारत माता का प्रकट होकर जगद्गुरु को फूलों का हार पहनाना)

भारत माता :—

दोहा—जगद्गुरु जाकर करो जातिका उद्धार।
साधु पुरुषों में करो देश भक्ति प्रचार॥

शङ्कराचार्य्य—बोलो भारत माता की जय, हे मातेश्वरी! दरिया अपना रोज़ाना काम करता है। बस्तियों और मैदानों में बहता हुआ चला जाता है, तो भी उसकी लहर तेरे चरणों को चूमने के लिये दौड़ी चली आती है। फूल अपनी खुशबू से हवा को सुगन्धित बनाता है, तो भी उस

की आखिरी सेवा यह है कि वह अपने आप को तेरी भेंट कर दें, तो क्या मैं अपने इस जीवन के खूबसूरत फूल को तेरी भेंट नहीं करूंगा, परमात्मा ने यह सुन्दर पुष्प इसी मतलब के लिये पैदा किया है।

बल दे मुझे कि मैं तेरा कर्ज़ा उतार दूं।
जानें हज़ार भी हों तो मैं तुझ पर वार दूं॥

(तमाम लीडरों का भारत माता को प्रणाम करना भारत माता का सब पर फूलों की बारिश करना)

——o——
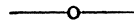
सीन ऐक्ट दूसरा छठा
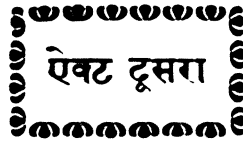
(स्थान पञ्जाबी लीडर का मकान)

(लीडर का लाला लाजपतराय की फोटो को जो मकान की दीवार से लटक रही है देख कर :—)

लीडर—अय शेर पञ्जाब अफ़सोस कि तू इस वक्त पाताल लोक में पार्लामेन्टियों की जञ्जीरों से जकड़ा हुआ हसरत की निगाहों से अपने प्यारे वतन को देखने के लिये बेताब है। हमारे सुख से सुखी और दुख से दुखी होने वाली महान् आत्मा, आ और देख कि आज किस तरह डायरशाही के हाथों हमारा खाना खराब है, जिस आज़ादी को तूने अपना शुद्ध रक्त पिलाया है, जिसके लिये तूने बन्धन का कष्ट उठाया है, आज उस आज़ादी के तमाम मार्ग हमारे लिये बन्द हो

रहे हैं, तेरे दुखी भाइयोंके नाले वायु मण्डल को चीर कर अन्तिम आकाश तक बलन्द हो रहे हैं।

आ और देख दुख की वर्षा बरस रही है।
हर एक आंख प्यारे तुझको तरस रही है॥
तुझ को अय लाजपत है पंजाब की दुहाई।
कुछ सूझता नहीं है कर आके रहनुमाई॥

(एक विद्यार्थी का दाखिल होना)

विद्यार्थी—वन्दे मातरम्!

लीडर-क्यों, आपका चेहरा क्यों उदास है, कोई बात खास

विध्यार्थी श्रीमान्! अब कुछ नहीं सूझता, अब हमें क्या करना चाहिये ?

लीडर-अपने जाति लाभ और फ़ायदे को पूछो को कौमी जरूरत पर कुर्बान करने के लिये तैयार रहना चाहिए मातृभूमि के गौरवार्थ अपने आत्मा पर एक प्रकार का कष्ट सहना चाहिये महात्मा गांधीके खामोश मुकाबले का नियम एक सुनहरी असूल है, उस पवित्र नियम पर हत्याचार का दोष फजूल है।

विद्यार्थी-हम अपने अन्तःकरण की आवाज़ के अनुसार हर एक काम करने को तयार हैं।

सिर पर सहेंगे मसानी और जेल में सड़ेंगे।
लेकिन हम आत्मा के बल झूठ से लड़ेंगे॥
सत बात ही करेंगे सत पर स्थिर रहेंगे।
औरों को दुख न देंगे और आप दुख सहेंगे॥

लीडर-लाहौर का क्या समाचार है ?

विद्यार्थी-वहां कर्नल जान्सन का खूब तूती बोलता है।

लीडर-सुना है कि कालिज के विद्यार्थियों पर जान्सन ने खूब हाथ साफ किये हैं।

इन हरकतों से क्या यश जाति का होगा दूना।
क्या है यही यूरूप की तहज़ीब का नमूना॥

विद्यार्थी-कर्नल जान्सन किसी आला पदवी की योग्यता नहीं रखता, वह एक मुहज्ज़ब इन्सान का दिल और हौसला नहीं रखता।

लीडर बेशक, हिज़ मजेस्टी के आला ओहदे की इज्जत रखते हुए, भारत पर शासन की ताकत रखते हुए, बादशाहकी वफादार प्रजा का अपमान करना निन्दनीय काम है।

विद्यार्थी-जिसका हर सूरत में बुरा अंजाम है।
जो युधिष्ठिर भीम अर्जुन कृष्णकी सन्तान हो।
जिसके दिल अपने राजा के लिये सन्मान हो॥
जिसका राजा के लिये सर्वस्व तक बलिदान हो।
ऐसी हितकारी प्रजाका इस तरह अपमान हो॥

लीडर-प्यारे भाई स्मरण रखो! चन्द्रमा एक छिन भर के लिये ग्रस्ता है, सायंकाल की शीघ्र ही ढल जाने वाली शफ़कके समान थोड़े समय के लिये ही राहु के चक्कर में फंसता है। जाति गौरव और आत्मिक बल रखनेवाली ऋषि सन्तान को जितना कष्ट दिया जाय उतना ही उसकी ज्योति का प्रभाव फैलने पायेगा। पवन से भरपूर गेंद को जितनी शक्ति से नीचे को फेंका जायेगा उतनीही शक्ति और बलसे ऊपर को उठेगा।

दबाने से सर्प भी काटखाने को उछलता है।
मुसीबत में बशर का जौहरे मर्दाना खुलता है॥

यह आज़ादी का जज़्बा लो दबाए और बढ़ता है।
कसौटी पर घिसाने से स्वर्ण का मोल बढ़ता है॥

विद्यार्थी-लेकिन तमाम ताज़ा हत्याचारों को ईजाद करनेमें डायरने कमाल किया है, वफ़ादारों को ग़द्दारों को एकही उल्टी छुरी से हलाल किया है।

प्रजा पर आक्रमण डायर का ऐसा बुज़दिलाना है।
सुनो तो रो पड़ो ऐसा अमृतसरका फ़साना है॥

लीडर—क्या जल्यांवाले बाग का हत्याचार ?

विद्यार्थी—हां भारतवर्ष का निर्दोष परिवार और अनर्थ की तलवार।

कटते हैं इस तरह भाई हमारे इस ज़माने में।
हैं कटते भेड़ बकरे जिस तरह कस्साबख़ाने में॥
सर और धड़ बह रहे थे इस तरह खूं की रवानी में।
बहे जाते हों तिनके जिस तरह दरिया के पानी में॥

लीडर-कितनी देर तक यह हत्याचार का बाज़ार गर्म रहा ?

विद्यार्थी—जब तक डायर के पास गोले बारूद का भण्डार गर्म रहा।

निर्दोष बाल और जवानों की टोलियां।
खाकर मरे हैं इस तरह डायर की गोलियां॥
कीड़ों को जिस तरह कोई पांओं से मार दे।
या इक पशु हकीर की गर्दन उतार दे॥

लीडर-जलसे को मुन्तशिर करने का कुछ उपाय न किया ?

विद्यार्थी—बल्कि जो लोग भयभीत हो कर भाग रहे थे, वही गोलियों का निशाना हुए, बच्चे और बूढ़े इसी दौड़ धूप में कुचले जाकर अदम को रवाना हुये।

लीडर—यह भारतवर्ष के दिनों का फेर है, कि इसी के टुकड़ों पर पला हुआ भी इसी पर ग़र है।

अय्याम ही बुरे हैं भारत की बेकसी के।
खाये इसी के टुकड़े, टुकड़े किये इसी के॥

विद्यार्थी—इतने पर भी इनकाम की अग्नि शान्त न हुई।

लीडर—अर्थात् ?

विद्यार्थी—इस से अधिक उत्पात, शहर के कुओं को सिपाहियों ने पेशाब से अपावन कर दिया, शहर वालों को पहरों तक धूप में पा बरहना खड़ा किया, धर्म स्थानों में जाने वाले पेट के बल चल कर जाते थे। जो साधारण सिपाही को भी सलाम न करते, वह हवालात की हवा खाते थे। बड़े बड़े लखपती रईस सर्कारी आदमियों को मजबूरन सलाम करते थे। कानून के जानने वाले वकील कुलियों का काम करते थे।

वां पर दलील और बहाना व्यर्थ था।
सुनना न था किसी को कोई यह अनर्थ था॥

लीडर—गोया शराफत जिल्लत के पैरों की ठोकरें खा रही थी, झूठ की अदालत न्याय की गर्दन दबा रही थी।

विद्यार्थी—और अभी तक दबा रही है, लीडर धड़ाधड़ निर्दोष पकड़े जा रहे हैं, पोलीस के द्वारा झूठी शहादतों के तोमार खड़े किये जा रहे हैं।

अदालत की दशा इतनी गिरी अन्धेर शाही में।
निरपराधी ज़बरदस्ती धरे जाते गवाही में॥
न हो गर पेश जो पोलीस वालों की सफाई में।
तो आ जाती है उसकी जान आफत और तबाही में॥

लीडर—निर्दोष और ऐसी परेशानी में ?

विद्यार्थी—इससे बढ़ कर पञ्जाब की राजधानी में, विद्यार्थियों की चार मर्तबा दिन में हाजरी ली जाती थी, उन्हें सख्त से सख्त अजीयत दी जाती थी, सोलह सोलह मील या ज्यादा चल कर जाना और इस पर जबान भी न हिलाना, यह है इन्साफ खुसरवाना।

मासूम बालकों पर यह जौर हो रहा है।
सर पीटता है न्याय और धर्म रो रहा है॥

लीडर—क्या ऐसा दण्ड देने वाले कर्मचारी का यह विचार है कि विद्यार्थियों पर अनर्थ करनेसे यह तहरीक दब जायेगी।

विद्यार्थी—नहीं बल्कि इस कष्ट और अत्याचार का विचार पत्थर पर लकीर की तरह विद्यार्थियोंके दिलों पर खुदा रहेगा।

हम भूल जायें चाहे कालिज की हिस्ट्री को।
भूलेंगे पर न हर्गिज लाहौर ट्रेजडी को॥

(एक अफसर का दाखिल होना)

अफसर—मिस्टर लीडर, माफ़ करना मैं आपकी बात चीत में दखल देना चाहता हूँ (जरा रुक कर) क्या आप तय्यार हैं।

लीडर—(अफ़सर का मतलब भांप कर) हां परमात्मा की इच्छा को सीस पर धारण करने के लिये हर वक्त तैय्यार हूं।

जो उसकी मसलहत है उस तलक किसकी रसाई है।
वह जो कुछ भी करेगा उस में मेरी ही भलाई है॥

अफ़सर—काश कि मेरी जगह कोई और अफ़सर इस ड्यूटी पर मामूर होता, तो आज मैं तुम्हारी गिरफ़्तारी का वारण्ट लाने पर न मजबूर होता।

लीडर—लेकिन हां इस के सम्बन्ध में एक प्रश्न जरूर करूंगा।

अफ़सर—कौन सा ?

लीडर—क्या आप वह दिन भूल गये ?

अफ़सर—कौन से दिन ?

लीडर—जंग जर्मन।

अफ़सर—वह कैसे ?

लीडर—अफ़सोस है कि जिन हाथों से आप मुसीबत के वक्त मुझ से युद्ध के लिये दान मांगने आये थे, आज उन्हीं हाथोंसे गिरफ्तार करने आये हो, क्या तहज़ीब का लहू इतना सफेद, उपकार का बदला कैद का है।

इमदाद की जिन्हों ने लड़ाई के अहद में।
उनको ही आज डालना चाहते हो कैद में॥
ज़र ले गये हो जिनका खुशामद से नाज से।
बम उन पर गिराते हो हवाई जहाज से॥

अफ़सर—पोलिटिकल मामला है।

लीडर—तो वह भी पोलिटिकल तकाजा था, हमने किस लिये जर्मन की लड़ाई में जर लुटाया था ?

अफ़सर—अच्छा खिलह पान के लिये !

लीडर—नहीं।

अफ़सर-हमदर्दी जिताने के लिये।

लीडर-नहीं।

अफसर इज्जत और खिताब पाने के लिये।

लीडर-नहीं।

अफसर-तो फिर ?

लीडर-अलबत्ता हमने आशा लगाई थी कि हमारे जर और बच्चों की शहादत से भारत की स्वतंत्रता का पौदा हरा होगा, हमें अपना प्राचीन मानवी स्वत्व मिला होगा। लेकिन वह हमारी भूल थी, सब आशा फ़जूल थी।

अब यह जाना है मदद करना भी इक तकसीर है।
कुछ निमक में ही हमारे बे असर तासीर है॥
हमने समझा था मिलेगी अब तो आजादी हमें।
वहम था वह ख्वाब यह उस ख्वाब की ताबीर है॥

अफसर—आप से और मुझ से ज्यादा हिज़ आनर ओडवायर इस नीति को समझते हैं।

लीडर—यह उसी ओडवायर की राजनीति का नमूना है, कि पंजाब में जो सङ्कट के वक्त सहायता में सब से आगे था आज मातम घर का नमूना और सूना है। ओडवायर की राजनीति का केवल तोपों और हवाई जहाजों पर आधार है, जो मुसीबत में मित्र था अब गुलाम और ग़द्दार है।

अफ़सर—और तुम्हारी राजनीति ?

लीडर—हमारी राजनीति क्या थी वह गीता और रामायण बतलायेगी। राम ने सुग्रीव का हाथ बटाया, तो सुग्रीव ने राम के कार्य्य हित अपना सर्वस्व लगाया, लङ्का पर चढ़ाई करने के योग्य बनाया, विभीषण ने राम की सहायता की, राम ने उस के पुरस्कार में उसे लङ्का की राजगद्दी दे दी।

राजनीति यह थी वह जिसमें जरा छल बल न था।
इस तरह पर देश प्रजा के लिये मकतल न था॥
नेक था नेकी का बदला बद का बद अंजाम था।
हर तरह से थी सुखी प्रजा अमन आराम था॥

अफ़सर—मैं मजहबी बहस में नहीं पड़ना चाहता, और हथकड़ी लगाने के लिये माफी चाहता हूं (सिपाही से) इधर वर्फ।

(पोलीस का लीडर को हथकड़ी लगाना)

(ट्रांसफ़र)

सीन का ट्रांसफ़र होना वे शुमार मुहजिज और योग्य लीडरों को कैदखाने में पा ब जंजीर दिखाई देना पटाखे की आवाज पर आजादी का नमूनदार होना।

आजादी—

है जब यह आत्मा आजाद फिर बन्धन का डर क्या है।
यह है चैतन्य हस्ती फिर इसे जड़ का खतर क्या हैं॥
यह है आनन्द की मंजिल यह आजादी का द्वारा है।
नहीं बन्धन मेरे प्यारो यह छुटकारा तुम्हारा है॥

टेबला पर

ड्राप

———

सीन | ऐक्ट तीसरा | पहला

दिखाओ सीन—वाकिंसग।

आवाज़

(पञ्जाब के नकशे का फटना और पीछे में शिमले के पहाड़ का नमूदार होना। आराम कुर्सी पर चेम्सफोर्ड का बैठे हुए और खुशी व दौलत का हाथ ग्लास में लिये हुए दोनों पहलुओं में खड़े हुए नज़र आना।)

अन्दर से गाने की आवाज।

गाना।

उठो नजाकत में सोने वालो तुम्हें जमाना जगा रहा है।
तुम्हारी गफलतमें कोई भारतका नामतक भी मिटा रहा है।
तुम्हें तो पहुंचा रहा है ठण्डक ऋतु यह शिमलेकी वायुओं की
खबर है प्रजाको दुखकी आगमें कोई ज़ालिम जला रहा है।
हजारों बच्चे अनाथ हैं और हजारों विधवायें रो रही हैं॥
लगाओ ढारस का उनको मरहम कि दर्द उनको सता रहा है।
हैं जिनकी मेहनतसे आज शिमले की यह हवायें नसीब तुमको
उन्हीं की पिछली मुरव्वतोंको यह ओडवायर भुला रहा है।
तुम्हारा इस वक्त जो धरम है करो उसे चेम्सफोर्ड पूरन॥
तुम्हारी खातिर जो मरमिटे हैं उन्हीं को डायर मिटा रहा है।

चेम्सफोर्ड—(चौकन्ना होकर) यह कैसी दर्द भरी आवाज आ रही है।

आज इस बंगले की दीवारों की सूरत ज़र्द है।
सुन रहा हूं मैं कि इस आवाज़ में कुछ दर्द है॥

खुशी—श्रीमान्! दर्द किसका? मेरे होते हुए दर्द की हस्ती नहीं रह सकती। आप मेरे कर कमल से एक प्रेम प्याला पीजिये और दिलसे इस दर्द के ख्यालको दूर कीजिये।

गम का यह होगा कोई मातम यह होने दीजिये।
रो रहा है जो उसे मातम में रोने दीजिये॥
दे रही है अपने कोमल हाथ से पीरी थपक।
सुख के फूलों की शय्या पर दिल को सोने दीजिये॥

दौलत—हे भारत के वीर शासक, जब तक आप की यह चरना लौंडी आप की सेवा में ततपर है, आप के सन्मुख आने की चिन्ता की क्या समर्थ है।

बड़े आराम से झूलो पड़े खुशियों की झूलों में।
न कांटा गम का आने दो कभी इन सुख के फूलों में॥

आवाज—(अन्दर से भारत माता), इन्साफ व राजनीति का डेपुटेशन। सुनो दीन की हाहाकार सुनो!

चैम्सफोर्ड बार बार शोर मचाकर हमारे कानों को कौन कष्ट दे रहा है।

छेड़ता है कौन इस मातम के सोजो साज को।
कान भी दुखने लगे हैं सुनके इस आवाज को॥

सेक्रेटरी—हुज़ूर अनवर, कुछ दुखी लोगोंका डेपुटेशन है

चैम्सफोर्ड—यह कौन लोग हैं?

सेक्रेटरी--इंसाफ़ राजनीति और भारत माता।
अब तक सितम की गोया तलवार तन रही है।
सूरत मलीन तीनों दुखियों की बन रही है।

मानो किसी ने उनको पांओं में रौंद डाला।
कपड़ों में खाक मिट्टी और धर छन रही है॥
चैम्सफोर्ड—जाओ, उनको अन्दर बुलाकर लाओ।
खुशी—तो श्रीमान हम यहां से निकल जायें?
आप को सेवा का सब को हौसला होने लगा।
दर्दमन्दों का यहां मातम बपा होने लगा॥
जिस जगह ग़म है वहां कैसे खुशी की जात हो॥
काम क्या टिनका वहां होगा जहां पर रात हो॥

दौलत—मैं भी तो यही कहती हूं, कि दुख और दर्द के साये से मेरा पवित्र शरीर भ्रष्ट हो जायेगा। इन लोगों के आने से मेरी गुरुता का तेज नष्ट हो जायेगा। माई लार्ड मेरे होते हुए आप को दुखी लोगों की संगत नहीं करनी चाहिये, इन लोगों को जवाब में "नहीं" करनी चाहिये।

जहां पर खुशी और दौलत पड़ी है।
जहां चोबदारी में राहत खड़ी है।
वहां दर्दमन्दों का आना मना है॥
वहां आके आंसु बहाना मना है।

चैम्सफोर्ड—लेकिन यह लोग बड़ी आशा लगाकर आये होंगे, हर तर्फ से ठोकरें खाकर आये होंगे।

दौलत—तो जो लोग खुशी और दौलत से हीन हैं, वह हमेशा ठोकरें ही खाया करते हैं। ये लोग दुनियां में एक दूर दराज जङ्गल में उन नामुराद फूलों के मानिन्द हैं, जो कि समपुर्सी की हालत में पैदा हुए खिलते और मुर्झा जाया करते हैं।

उनके साये से सदा दामन बचाना चाहिये।

जो कि निर्धन हैं उन्हें मत मुंह लगाना चाहिये ॥
उनकी हस्ती ही बनी है नीच कामों के लिये।
ठोकरें अच्छी हैं इन मुफ़लिस गुलामों के लिये ॥

खुशी—अगर आप उनका दुखड़ा सुनकर उन्हें अपनायेंगी, उन्हें मुरब्बत की सहायता से आसूदा बनायेंगी, तो फिर आप की सेवा कौन करेगा, आपके ऐशो आराम की रक्षा करने के लिये सङ्कट का सामना कौन करेगा ?

वह करो युक्ति कि जिस से यह सदा मोहताज हों।
इन की आशायें सदा तकदीर से नाराज हों ॥
मुंह लगाते ही रहोगी तो यह सिर चढ़ जायेंगे।
इनको गर अवसर मिला तो आप से बढ़ जायेंगे ॥

आवाज—(अन्दर से डेपुटेशन की) सुनो सुनो, अय नर्म गद्देलों पर लम्बी तान कर सोनेवाले। दौलत और खुशी पर हजार जान से कुर्बान होने वाला दर्दमन्दों की भी हाहाकार सुनो; क्यों वृथा अभिमान पर उधार खाये हो, हम भी तो उसी ईश्वर के पुत्र हैं जिसके तुम बनाए हो ?

न दौलत के नशे में इस कदर भी चुर हो जाओ।
न बल कौशल पे इतने निर्दयी मग़रूर हो जाओ ॥
न इनकी बात पर जाओ यह उलटी राह जाते हैं।
यह दौलत और खुशी तो धर्म से तुमको गिराते हैं ॥

चेम्सफोर्ड—अच्छा यह लोग क्या कहना मांगते है ?

सेक्रटरी—हजूर, पञ्जाब में ओडवायर ने जो उत्पात किया है, डायर ने जो निर्दोषों का रक्तपात किया है, उन लोगों के हत्याचार से जो लाखों घराने बर्बाद हुए हैं, अमृतसर के जल्यां वाले बाग़ और दूसरे शहरों में जो अपवाद

हुए हैं, यह उनकी करुणा जनक कथा सुनाना चाहते हैं, अपने जख्म खोल कर दिखाना चाहते हैं, इस मामले में आप से न्याय कराना चाहते हैं।

यह आपके जिम्मा ही सियासत के काम हैं।
कारण कि आप शाह के क़ायम मुकाम हैं॥
सरकार की मदद पे उन्हें एतबार है।
भारत में उन को यही तो अन्तिम द्वार है॥

चेम्सफ़ोर्ड-आखिर उनकी क्या सलाह है?

सेक्रेटरी-कि आप कुछ समय के लिये पंजाब की यात्रा करें, अपनी आंखों से हत्या काण्ड का दृश्य मुलाहजा करें।

हाल के शामिल अगर इतनी दया हो जायेगी।
आप की इतनी दया उनकी दवा हो जाए गी॥

चेम्सफ़ोर्ड-मगर एप्रेल का महीना है, शिमले से सफर करना जान बूझ कर मरना है।

खुशी-हां श्रीमान् सत्य है, पंजाब की गर्म जल वायु से आपका मिजाज बिगड़ जायेगा, शिमले की सुगन्धित शीतल वायु का आदी शरीर पंजाब की गर्म हवाओं का कष्ट क्यों कर उठायेगा। आपके दुश्मनों की तबीयत बिगड जायेगी तो क्या इन लोगों की दर्दमन्दी कुछ काम आयेगी?

उसी में जल बुझे हैं यह जो अग्नि खुद लगाई थी।
बचाता कौन उनको वह मरे हैं जिनको आई थी॥
यहीं पर कीजिये ग़म का अगर इज़हार करना है।
मरे हैं जो अब उनके वास्ते क्या हमको मरना है॥

दौलत-अगर तीस करोड़ गुलामों में से एक आध हजार मर भी जायें तो क्या सरकार का काम रुक सकता है?

गरीबों को अमीरों से ही आखिर काम पड़ता है।
गरीबों की कमी से क्या अमीरों का बिगड़ता है॥

चैमसफोर्ड-ठीक है, ऐसी घटना तो राज में हुआ ही करती है और जो कुछ ओडवायरने किया होगा वह सोच समझ कर किया होगा, अपने देश और जाति के हित का काम किया होगा।

जो हुआ इस पर न अब आंसू बहाना चाहिये।
हिन्दियोंको अब यह घटना भूल जाना चाहिये॥

आवाज-परन्तु यह वह घटना नहीं जिस को भारतवासी भूल जायेंगे। क्या भारतवासी यह खूनी इतिहास भूल जायेंगे? नहीं नहीं, आप आंखों से देखेंगे तो शिमलेका वास भूल जायेंगे।

न देखा हो अगर अन्धेर तुमने ओडवायर का।
न देखा हो अगर पहले कभी भी जुल्म डायर का॥
तो देखो किस तरह दोनोंने मिलकर खाक छानी है।
बहाया इस तरह है खून मानो खून पानी है॥

आवाज पर फ्लाटका फटना, जल्यां वाले बाग का दहशत नाक नजारा दिखाई देना, सबका देख कर कांपना टेबले पर पर्दा।

सीन ऐक्ट तीसरा दूसरा

स्थान अगला महल—पर्दा !

(शौकतअली व महात्मा गांधी का आना)

गांधी—प्यारे शौकत अब हमें एक संसार को यह दिखाना है कि हिन्दू और मुसलमान अपने अपने मजहब पर क़ायम रहते हुए भी किस तरह एक हो सकते हैं, किस तरह पापोंसे छूटकर दोनों नेक हो सकते हैं।

शौकतअली—उस खालिक वाहद से कौन सी बात दूर है, अब उस खुदा को यही मंजूर है।

तारे कब रोशनी से न्यारे है, तुम हमारे हो हम तुम्हारे हैं।

गांधी मत भेद के सिवा हमारे बीच में और कोई भेद भाव नहीं।

दोनों का एक खुदा है और दोनों भारत के बेटे हैं।
दोनों गर्दिश के मारे हैं दोनों किस्मत के हेटे हैं॥

शौकतअली—

हमको है चिन्ता भारतकी और उस पर दर्द खलाफत का।
तुम दुखी हमारे दुख में हो उस पर है रोग सियासतका॥

गांधी—इस वक्त हमारे दुख और सङ्कट की सीमा नहीं।

कठिन जीना है और है सामना आफत पर आफत का।
इधर रोना है भारतका उधर रोना खलाफ़त का॥

शौकतअली—लेकिन प्यारे गांधी, याद रखो जिस दिन दुनियां में खिलफ़त का नाम न होगा, उस वक्त यह समझ लेना कि आलम के तख्ते पर इस्लाम न होगा।

यह जिंदा ही रहेगी गर हमारा नाम बाकी है।
खिलफत तब तलक है जब तलक इस्लाम बाकी है॥

गांधी-अफसोस! क्या इङ्गलैण्ड के साथ आपका यह समझौता था?

शौकतअली—खलाफत की आन पर बट्टा लगाने के लिये कौन मुसलमान तैयार होता था, लेकिन हमें बतलाया गया कि इस्लाम की अज़मत की तौहीन नहीं की जायेगी, तम्हारी खिलाफत पर आंच न आयेगी।

नहीं एक वादा भी पूरा हुआ है।
बताओ तम्हो कौन अब बे वफा है॥

गांधी—तो जहां इन बातोंने भारत वासियोंके दिल घायल किये हैं, वहां हिन्दू मुसलमानोंके दिल परस्पर जोड़ दिये। जिस हिन्दू मुसलमानों की एकता के लिये नेता लोगोंने बड़े परिश्रम से कई सालों तक -ल किया, उस एकता का संसार चक्र ने एक ही दिन में सफलता का सेहरा पहना दिया।

जो कि नामुमकिन था वह ही आज मुमकिन होगया।
आज भारत के लिये स्वराज्य मुमकिन हो गया॥

शौकतअली—आपने इग्लिश मुदब्बरोंकी पालिसी को देखा

न पूरा हो कयामत तक भी यह इकरार देखा है।
यह वादों से मुकर जाना यह साफ़ इन्कार देखा है॥

गांधी—हमने क्या नहीं देखा लार्ड कर्जन का शासन नहीं देखा या कि जनूबी अफ्रीकाके आन्दोलनमें बृटिश सरकार का चलन नहीं देखा।

शौकतअली—अङ्ग जर्मन में जब भारतने अपना तन मन और धन निछावर किया था, क्या उस समय हम लोगों ने

तमाम सियासी तहरीकों को इसी लिये रोक दिया था।

गांधी—"लीग आफ़ नेशन" ने हमें विश्वास दिलाया था कि अगर जर्मनी के तमाम मंसूबे बर्बाद हो जायेंगे तो तमाम पराधीन देश आजाद हो जायेंगे। इसी आशा पर मैंने स्वर्गीय तिलक को असहयोग करने से रोका था।

दोहा—लेकिन इतने त्याग और आशा के पश्चात्।
रौलट बिल ने कर दिया भारत पर आघात॥

शौकतअली-और इस पर डायर का अत्याचार, मार्शल ला का वार, लार्ड चेम्सफोर्ड का पीठ ठोकना, डायर की इमदादके लिये फण्ड खोलना।

किया है मजबूर सबने मिल कर हुई नसीरी हमें सताकर।
अब इसपे कहता है कौन भारत को बेवफाओंसे तू वफाकर॥

गांधी—अब तो भारतवासियों को नौकरशाही की न्याय शीलता पर लेशमात्र विश्वास नहीं, अब किसी तरहकी इनलोगों से आशा नहीं। दफतरी हकूमतने अभी तक अनर्थ की तलवार को वापस म्यानमें नहीं डाला। जबान बन्दीसे कैदसे, जुर्मानेसे जब तक भी वक्त आया अपने दिल का गुबार निकाला।

जारी रहा यदि कर्म यह यूंही हमारे नाश का।
तो अस्त समझा सूर्य भारत भाग्य के आकाश का॥
जो कुछ रही थोड़ी सी जां वह भी न रहने पायेगी।
यह स्वर्ण भारत भूमि बस मरघट मही बन जायेगी॥

शौकतअली-इन कोताह अन्देश हाकिमों पर अफसोस है, जिनको इतने पर भी सब्र नहीं, जिनका अपनी उमड़ी हुई बेलगाम तबीयतों पर जरा भी जब्र नहीं। वतन की बेचैनी जो खतरनाक आग के शोलों की तरह आसमान की तरफ बढ़

रही है, वह कहीं दुनियां के अमनों अमान पर हाथ साफ न करे, अपनी ताकत से आप अपना इन्साफ न करे।

कह रहा है आस्मां कुछ अब दिनों का फेर है।
भर चुका है अब यह बर्तन फूटने की देर है॥

गांधी-तो उचित होगा कि हम इस घोर असन्तोष का उपाय करें अपनी मुसीबतका आप न्याय करें, प्रजाकी प्रज्वलित रोष अग्नि फैलाने के बदले आत्म त्याग का उपदेश करें।

दफ़तरी अज़मत को काटें आत्मिक हथियार से।
ज़ुल्म का लें इनसे बदला सब्र की तलवार से॥

शौकतअली-मुझे कामयाबी की पूरी उम्मेद है। आप की इस्लाह निहायत ही मुफीद है। हमारी दबी हुई जिन ताकतों के जोर पर दफतरी हकूमत हम पर जुल्म करने के काबिल है, वह ताकते हटा ली जायें।

गांधी-तात्पर्य यह कि अन्याय से अपना सम्बन्ध तोड़ लें, और न मिल वर्तन करके नौकरशाही को अपनी किस्मत पर छोड़ दें। यही सबसे अच्छा और अन्तिम उपाय है, हमारे लिये अब यही धार्मिक न्याय है।

इस युक्ति से शक्ति जुल्म की एक दिन तबाह होगी।
मुझे निश्चय है यह आखिर हमारी ही फतह होगी॥

शौकतअली-अदम तआवनके लिये इससे बेहतर मौका फिर हाथ नहीं आ सकता। मार्शल ला और खिलाफतके मसलेसे जो बेदारी मुल्कमें हो रही है, अब उसे कोई भी नहीं दबा सकता।

है झुकाओ इस तरफ अंदार और मोहताज का।
चाहता है बच्चा बच्चा अब तो हक स्वराज्य का॥

गांधी-और अब स्वराज्य के बिना हमारी जाति का उद्धार

नहीं होसकता। स्वराज्यके बगैर देशका उपकार नहीं होसकता।

दोहा-पराधीनता का मिटेगा इस से ही रोग।
आशायें पूरन करेगा केवल असहयोग॥

शौकत—अब इसका प्रोग्राम तैयार करना होगा।

गांधी— प्रोग्राम यही है कि पदवी धारी पदवियों का त्याग करें कौंसलों और बृटिश अदालतों का बहिस्कार हो। सरकारी कालिजों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को त्याग का विचार हो, ताकि देश को नौकरशाही सरकार की संस्थाओं का ज्ञान मिट जाय। स्वदेशीके प्रचार से भारतवासियों का अज्ञान मिट जाय बोलो स्वराज्य की जय।

(स्वराज्य का झंडा लिये गांधी महाराज के चन्द एक शिष्यों का आना और गाना)

गाना।

हम लेकर छोड़ेंगे इसको, स्वराज हमारा हक है। हम।
सब कुछ कुर्बान करेंगे, देटों पर सीस धरेंगे॥
बन्धन से नहीं डरेंगे, क्या चिन्ता यदि मरेंगे। हम लेकर
प्यारो सब भेद मिटाओ, सब कर्म बीर बन जाओ।
आत्म का तेज दिखाओ, गांधी की कुशल मनाओ। हम॥
भारत यह देश हमारा, है प्राणों से भी प्यारा।
सत और धर्म की धारा, तन मन धन इसी परवारा। हम।

मीन एक तीसरा चौथा

कौमी पिण्डाल।

पटम तपोवनके झण्डे के नीचे गांधीका चर्खा कातते हुए दिखाई

गाना ।

चर्खा कातो अय प्यारो स्वराज अगर लेना है ।
चर्खे से हमको मित्रो घर जर से भर लेना है ॥
यह चर्खा बना स्वदेशी है सच्चा मित्र हितैषी ।
हमको भण्डार विदेशी अपने बस कर लेना है ॥
ऐसा अब करो उपाय पैसा नहीं बाहर जाय ।
हमको इंग्लिश से न्याय इस चर्खे पर लेना है ॥
कातो अय बहनो भाइयो, कातो अय मित्रो भाइयो ।
हमको अय मित्र महाइयो, स्वराज समर लेना है ॥

(एक शराबखोर का हाथ में बोतल लिये सूफ़ियाना हालत में दाखल होना)

शराबी—नहीं है नहीं है, वह आज़ादी जो मनुष्य को गुलामी के बन्धन से आज़ाद करती है, वह इस शराब में नहीं । वह सच्ची खुशी जो इन्सान को मरते दम तक न उतरनेवाली खुमारी से शाद करती है, वह इस शराब खाना में नहीं । शराब खोरी हमारी गुलामी की जंजीरों का और भी कठिन कर रही है । यह शराब खोरी हमें मुफ़लिस और निर्धन कर रही है । यह खाना खराब हमें छिन भर के लिये झूठी खुशी देकर हम से द्रव्य पदार्थ जन्म भर के लिये छीन ले जाती है । यह खाना खराब हमें भूका कङ्गाल और भिखारी सौदाई बनाती है यह शराब हमारे देश की दौलत को लूट कर हमें रुस्वाई का मुँह दिखाती है ।

ज़िल्लत का है निशान गरीबों का क़हर है ।
खुश रङ्ग है असर में मगर एक ज़हर है ॥
सेवन किया है जिसने इस मदिरा मलीन का ।

दुनियां का वह रहा न रहा अपने दीन का ॥

इस कमबख्त ने बीबी के शरीर का जेवर और सन्दूकका धन तक न छोड़ा। इसने अपने अभागे पुजारी के घर का बर्तन तक न छोड़ा। आत्मा और बुद्धि को मलीन कर दिया, हर तरफ से निराश और निर्धन कर दिया। बस आज से इस नामुराद को तिलांजलि देता हूं और अदम तआवन (असहयोग) की शरण लेता हूं। मैं इस को अपावन और भ्रष्ट वस्तु समझ कर हमेश के लिये छोड़ता हूं, आज से इस बातल को तोड़ता हूं (तोड़ना) इस लिये नहीं, कि इसने केवल मेरी ही बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया, बल्कि इस लिये कि इसने हमारे देश की पवित्रता को नष्ट कर दिया।

बसीला है दुखों का यह जरिया है यह तापों का।
यह कारण है बुराई का यही है मूल पापों का ॥
न मिल बतन करूंगा आज से इस भ्रष्ट वस्तु से।
मैं अब भागूंगा इसके नाम से और उसकी बदबू से ॥

[अदम तआवन के झंडे के नीचे जाकर चर्खा कातना]

गांधी—आओ! आओ! खोटा राह को त्याग कर उस सच्चे मार्गपर आओ। जो सीधा खुशी और स्वाधीनता की खूबसूरत मञ्जिल को जाता है।

दोहा—होगा अब नहीं जान पर सङ्कटका आघात।
नया जन्म है आज से हुआ तुम्हारा तात ॥

शराबी—बोलो गांधी की जय!

(खां साहब का आना)

खां साहब—कुछ नहीं, यह खिताब जो नाम की खुशबूको केवल नौकरशाहीको तङ्गतारीक दुनियांमें फैलाता है,जो अपने भाइयोंका छत्रपत्र बननेके बजाय नौकरशाहीको खुशामद का पात्र बनाता है। कुछ नहीं,यह चककदार सुनहरी और खयाली सूरत का खिताब पाकर इन्सान अपने आपको बिरादरी और भाई चारेके आनन्द मंगलसे दूर समझने लग जाता है। वह अपनी शानको बाकी तमाम भाइयोंसे बाला और अपने आपको मगरूर समझने लग जाता है। लेकिन यह गरूर और बड़ाई जो अपनी मातृभूमिके जाये सगे भाइयों को आजाद मोहब्बतसे महरूम करके जीवन को शानदार बनाती है, जो गुलामी के गढ़े को सबसे नीची गहराई तक ले जाती है वह तुच्छ है। उसका जाहरी रूप कुछ है और बातनी सूरत कुछ है।

है बोझ नदामत का धन्धा है गुलामी का।
दासत्व का बेड़ी है फन्दा है गुलामी का॥
जो इसके हैं दिलदादा देश का भूले हैं।
हस्ती नहीं है जिसकी उस चीज पै फूले हैं॥

खिताब के लिये एडियां रगड़ने वाले एक ऐसे मार्ग पर जा रहे हैं। जा स्वाधीनता से बहुत दूर है और जो गुलामी की झाड़ियों और क्लेशके कांटों से भरपूर है।

जगत में अच्छे बुरे की इन्हें तमीज नहीं।
यह जान देते हैं उस पर जो कोई चीज नहीं॥

चूंकि इन खिताबोंके शौकने ही मेरे हम वतन भाइयों को जलील बनाया है, देश को जल्यां वाले बाग़ का दृश्य दिखाया है, खिलाफत की आन को मिटाया है, इस लिये मैं आज अपने खताबों को सलाम करता हूं।

इन्हीं के बोझने अच्छे ख़यालों को दबाया है।
हमें बेबस किया है और हमें बेकस बनाया है॥
न मिल वर्तन करूंगा आज से मैं इन खतावों से।
रखूंगा दीनका छूटूंगा दुनियां के अजाबों से॥

[अदम तआवन के झगड़े के नीचे जाना]

गांधी—आओ प्रिय, उस मार्यके नीचे आओ, जो तुम्हारे तांप को दूर कर देगा, सत्य धर्म की शिक्षा देकर अज्ञान को चूर चूर कर देगा।

उपाधि अब यह झूठी है यह गद्दारी गुलामी है।
करो भाइयों से मिल कर काम इसीमें नेकनामी है॥

ग्रामीणसब—बोलो गांधी की जय।

जिलेदार—कुछ नहीं, यह गुलामी की ताबेदारी कुछ नहीं। यह नम्बरदारी यह जिलेदारी कुछ नहीं। यह उपाधियां हमारे दिल और दिमाग को परतंत्रता के विचारों से भरपूर कर देती है, हमें तरक्की के रास्ते से हटाकर आजादी की गोद से दूर करती हैं। इन्होंने हमारे ऊपर गुलामी का गहरा रङ्ग चढ़ाया है। इन्होंने हमारे बच्चों को कौमी तालीम के विचार से महरूम करके गुलामी का सबक पढ़ाया है। इन्हों ने हमें स्वार्थ का दाना दिखाकर उस जालमें फंसाया है, जिससे निकलना मुहाल है। आज ठंडे दिल से विचार करने पर, अपने अन्तरात्मा की आवाज सुनने पर हमें प्रतीत हुआ कि हमारा सर्वस्व पामाल है। कानून की खुफिया पेचीदगियों में फंसी हुई हमारी अपनी बरासत ही हमारा अपना माल नहीं, इस पर भी हमें अपने और अनभले का ख्याल

नहीं। आज तक हमें इसका ध्यान न था, डायर और ओडवायरके हाथों घायल होनेका गुमान न था, लेकिन आज रोशन हुआ कि हमने अन्धेरे में रह कर सख्त धोखा खाया। आज दुखी भाइयोंके लिये, खलाफतके लिये, वतनकी आन के लिये, कौमी शानके लिये नम्बरदारी और जिलेदारीस में अपना पल्ला छुड़ाता हूं और अदम तआवनके झगड़ेके नीचे आता हूं।

गलत रास्ते पै है जो अब तलक उसका मुआवन है।
जिसे मगरूर नौकरशाही से अब तक तआवन है॥
खुदा के सामने मैं आज यह इकरार करता हूं।
तआवन से हमेशा के लिये इन्कार करता हूं॥

[अदम तआवन के झगड़े के नीचे आना]

गांधी दो०—दीन रहा तो सब रहा इसको निश्चय जान।
सब कुछ उसके हाथ है जिसका है ईमान॥

जिलेदार—बोलो गांधी की जय।

(विद्यार्थी का आना)

विद्यार्थी--जकड़ा है बाल बाल गुलामी की तंग से।
और आत्मा रङ्गा है गुलामी के रङ्ग से॥
पर्दे पड़े हुमी के हैं दिल दिमाग पर।
स्याहीसी एक फिर गई रोशन चिराग पर॥

यह इतिहास हमारे दिलों से अपने पूर्वजों का मान घटाता है। यह औरङ्गजेब का स्याह दिल और सेवाजी को डाकू बतलाता है। यह अलजबरा हमारी बुद्धि को कल्पित सूरतों के गोरख धन्धे में फसाता है। यह हिसाब हमें वह गुर सिखलाता है, जो जन्म भर हमारे किसी काम नहीं आता

यह जुगराफिया हमें तोते की तरह रटने का सबक पढ़ाता है यह कहानियों का कोर्स हमें बिल्ली को चार टांग और कुत्ते के दो कान के सिवा कुछ नहीं सिखाता है। यह शिक्षा हमारे दिलों में दफ़तरी हकूमत की नौकरी का शौक पैदा करती है। यह सरकारी स्कूलों और कालेजों की शिक्षा हमें अपनी प्राचीन चाल ढाल से भगा कर हमें फैशन पर शैदा करती है। ऐसी तालीम जो हमें फ़ाक़ाकशी का हुनर सिखाती है, जो हमें पराधीन और मुफलिस बनाती है, आज मैं उस तालीम से हमेशा के लिये असहयोग करता हूं।

सुबास आती गुलामी की है इन खुश रंग फूलों से।
न मिल वतन करूंगा आज से मैं इन स्कूलों से॥

अट्ठम तख़्वन के झगड़े के नीचे जाना

गांधी-टोपा—युवकों पर है देश और जाति का आधार।
चर्खा कातो तान और करो देश उद्धार॥

विद्यार्थी—बोलो गांधी की जय।

जण्टलमैन का आना।

लटा है माली जर अपना इन विदेशी लिबासों में।
बन्धी है अपनी गर्द न इनके ही तागों की रासों में॥
बने हैं इस कदर लट्टू हम इन की खुश नुमाई पर।
जरा भी अब ध्यान अपना नहीं अपनी भलाई पर॥

लेकिन यह कालर क्या है गुलामी का फन्दा है, हमारा हर एक विचार आज विदेशी शासन का बंदा है। यह नकटाई नहीं, बल्कि हमारी गर्दन की जञ्जीर है। हमारा खाना पीना पहनना उठना बैठना सब कुछ विदेशी बन्धनमें

असीर है। इन्हीं जाहरी खूबसूरतियों के सब्ज़ बाग़ में आकर हम करोड़ों रुपये विदेशों को लुटा देते हैं। हम यह सुनहरी भड़क देखने के लिये अपने घर को आग लगा देते हैं। वह स्वदेशी खद्दर जिसको हमारे पूर्वजों के पावन शरीर ने पवित्र किया है, हाय, आज हमने भोलेपन में फंसकर, धर्म से पतित होकर उसे त्याग दिया है। जिस देशी खद्दर स्वराज का आधार है, उसे हमने छोड़ दिया, जो चर्खा हमारे लिये लक्ष्मीका भण्डार है, उसको हमने तोड़ दिया, हमारे दिमाग़ रद्दी होगये, हमारे मन अपवित्र होगये। हम सिरसे पैर तक विदेशी हैं हमने अपने कर्त्तव्यको, अपने धर्मको मसल दिया, और धर्मने हमको कुचल दिया। हाय हमने यह न जाना कि:—

देश के तिनके में तेरापने की एक तासीर है।
देश की मिट्टीका ज़र्रा भी बड़ा अक्सीर है॥
देशका खद्दर है बढ़िया मख़मलो कमख़्वाब से।
मात है अतलस विदेशी इसका आबोताब से॥

आज अपने जाति सुधार के लिये, देशोद्धार के लिये, अपने मुल्क का पैसा बचाने के लिये, कौम को मुफ़लसी को मिटाने के लिये और स्वराज्य पाने के लिये मैं विदेशी वस्तु को हाथ नहीं लगाऊंगा। स्वदेशी खद्दर पहनूंगा, स्वदेशी भोजन खाऊंगा और परमात्मासे प्रार्थना करूंगा।

मेरा खाना स्वदेशी हो मेरी भाषा स्वदेशी हो।
मेरी शिक्षा स्वदेशी हो मेरी आशा स्वदेशी हो॥
मेरी नस २ मेरी रग रग स्वदेशी की हितैषी हो।
मेरा जीना स्वदेशी हो मेरा मरना स्वदेशी हो॥

गाना।

मेरा हो तन स्वदेशी, मेरा मन हो स्वदेशी।
चोटी से हो चरण तक मारा बदन स्वदेशी॥
घरबार हो स्वदेशी, ईश्वर की गर दया हो।
कश्मीर से कुमारी तक हो वतन स्वदेशी॥
ऐसे विचार मेरे भारत इधार सोचें।
हो शुद्ध और निर्मल मेरा चलन स्वदेशी॥
ऐसे स्वदेश से हो मेरी अटल हो प्रीती॥
भारत के वास्ते हो जीवन मरण स्वदेशी॥
फल फूल हो स्वदेशी भारत के गुलिस्तां का।
बुल बुल भी हो स्वदेशी और हो चमन स्वदेशी॥
जब तक जियूं स्वदेशी सिंगार हो बदन पर।
मर जाऊं तो भी होवे मेरा कफन स्वदेशी॥

(अदम तआवन के झंडे के नीचे जाना)

गान्धी-दोहा-सब भाई मिल कर करें ऐसा आतम त्याग।
निश्चय जागें शीघ्र ही इस भारत के भाग।

जैण्टलमैन—बोलो महात्मा गांधी की जय।

(वकील का दाखिल होना)

वकील—दुनिया कहती है कि तू कानूनी दिमाग हरकत नहीं करता। कानूनी दिमाग हमेशा कानून की चार दिवारी में बन्द है। गुलामी के बन्धन में रह कर उसे अपना जीवन व्यतीत करना ही पसन्द है। एक वकील को अपने ही हलवे मांडे से काम है, उसका धर्म पैसा और उसका मजहब दाम है, लेकिन यह ख्याल खाम है। मैं देखता हूं कि

वह कानूनदां ही हैं, जिन्होंने प्रजा को सच्चाई और आजादी का सीधा मार्ग दिखाया है, और मुझे विश्वास है कि यदि सारे कानूनदा आज इस असहयोगके समरमें उतर आयें, तो देशकी सारी मुश्किलें हल होजायें। आओ! मेरे कानूनदां भाइयो! आगे बढ़ो, रोजी देनेवाला वह अन्नदाता है, जो एक कीड़ी से लेकर हाथी तक को पहुंचाता हैं।

यह दाता बड़ा दयालु है जब गर्भ में देता था।
जब जन्म लिया तो देता था वही दाता सुध लेता था॥
अब भी उस पर विश्वास रखो खुला हुआ वह द्वारा हैं।
हमको क्या अपनी चिन्ता है जब रक्षक राम हमारा है॥

हमारा जीवन भारत की हस्ती से जुदा नहीं। हम लोगों को भी सबके साथ उठना और दौड़ना पड़ेगा। नहीं तो इस आन्दोलन की दौड़ धूप हमको कुचल डालेगी मैं सब से प्रथम ही देश की आवश्यकता पर स्वार्थ की बलि देता हूं और असहयोग की शरण लेता हूं।

बस आज से चर्खा कातूंगा तन मन भारत पर वारूंगा।
प्रचार करूंगा चर्खे का मन में यह निश्चय धारूंगा॥
इस चर्खे के ही द्वारा हम सब के आगे बढ़ जायेंगे।
स्वराज्य हमारा जो हक है वह एक बरसमें पायेंगे॥

(अदम तआवन के झंडे के नीचे आना)

गान्धी—रख ली तुमने मित्र हां मातृभूमि की लाज।
लेंगे हम नौ मास में अब निश्चय स्वराज॥

वकील—बोलो गांधी की जय।

(कटरसिन्धु का दाखल होना)

कटरसिन्धु—यह सब लोग असहयोग के झंडे के नीचे

क्यों एकत्रित हो रहे हैं। क्या सब मिलकर बगावत का काम करेंगे, नौकरशाही से संग्राम करेंगे।

ऐसा न हो सवाब के बदले अज़ाब हो।
इस अटम तशावन का नतीजा खराब हो॥

गांधी—यह तुम्हारा मिथ्याचार है। असहयोग खून बहाने वाला नहीं, बल्कि शान्तिमय आत्मिक हथियार है।

निकलती हो अगर इस बुराई।
न हर्गिज मैं बनूं इसका सहाई॥

कटरसिन्धु—अगर तुम्हारे इस आन्दोलन के सहायकारी तशद्दुद पर उतर आयेंगे तो क्या आप पहाड़ोंपर चले जायेंगे।

गांधी—अगर तशद्दुद भारत धर्ती का बन जायेगा, और उस समय मैं जीवित रहूंगा तो मैं भारत मे रहने की पर्वा नहीं करूंगा फिर भारत के नाम से मेरे हृदय में फख्र न होगा. देशभक्ति मेरे धर्म के अधीन है।

धर्म से ही अत्मिक थोड़ी सी शक्ति है मेरी।
धर्म के बल से हो मानों देश भक्ति है मेरी॥
मेरे हृदय में है इज्जत धर्म के उपदेश की।
धर्म की आज्ञा से ही करता हूं सेवा देश की॥

कटरसिन्धु-धर्मके सामने भारत माताकी कोई हस्ती नहीं?

गान्धी-धर्म के बगैर तो किसी की भी वतन परस्ती नहीं। मैं तो बालककी तरह भारतमाताकी छातीसे चिमटा हुआ हूं।

इसने ही धर्म सिखाया है यह आत्मबल की दाता है।
मैं भिक्षक हूं यह दाता है मैं बालक हूं यह माता है॥

कटरसिन्धु— आप को इस बात पर विश्वास है?

गांधी—हां कारण कि यह मुझे आत्मिक खुराक दे सकती

हैं। जब इस पर मेरा यह विश्वास नहीं रहेगा तो उस वक्त मेरा अन्तरात्मा ही मुझे अनाथ बालक कहेगा; उस वक्त हिमालय की वर्फानी तनहाई मेरे घायल आत्मा को शान्ति देगी।

मगर पैदा नहीं होती है हर्गिज आग पानी से।
निकल सकती नहीं सखनी कभी भी नर्म बाखी से॥

कटरसिन्धु--यदि तशद्दुद का शोला भड़क उठा तो असहयोग के सिपाही क्या करेंगे?

गांधी-असहयोगके सच्चे सिपाही उससे पहले ही तशद्दुद को रोकने को जहांजहद में भर जायेंगे।

कटरसिन्धु-क्या असहयोगसे स्वराज मिल जायेगा?

गांधी-यदि हम अपना तन मन धन लगाकर असहयोग पर डट जायेंगेतो आजादीके तमाम दर्वाजे खुदबखुद हमारे लियेखुल जायेंगे। धर्म खेंचे हुए बल से हमारी ओर लाता है।

हमारी ही तर्फ देखो तो वह स्वराज्य आता है॥

सीन का ट्रांसफर होना।

(बादशाह अपने हाथसे भारतमाता को स्वराज्यका ताज पहना रहे है) ड्राप।

Printed by Bengal Art Studio & Printing Ltd.,—Calcutta.